महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५९ अंक : १४

दयानन्दाब्द: १९३

विक्रम संवत्: आषाढ़ शुक्ल २०७४

कलि संवत्: ५११८

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११८

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु.,

आजीवन (१५ वर्ष)-२००० रु.।

एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर

द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डॉ.,

त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डॉ.,

आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.

एक प्रति - ३ पाउण्ड

एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

जुलाई द्वितीय २०१७

अनुक्रम

०१. राष्ट्राध्यक्ष और वैदिक चिन्तन	सम्पादकीय	०४
०२. यज्ञ ही क्यों-२	डॉ. धर्मवीर	०६
०३. सामाजिक समरसता अभियान....	रामनिवास गुणग्राहक	०९
०४. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु	११
०५. स्त्री शिक्षा	पं. उदयवीर शास्त्री	१६
०६. संस्कृत : एक जीवित भाषा	पं.श्यामजीकृष्ण वर्मा	१९
०७. वेद गोष्ठी-२०१७ के लिए निर्धारित विषय		२३
०८. पूज्य मास्टर आत्माराम अमृतसरी	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	२५
०९. साहित्य समीक्षा	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	२६
१०. शङ्का - समाधान - ५	डॉ. वेदपाल	२८
११. वैदिक सोम का स्वरूप	प्रो. सोमदेव 'शतांशु'	३१
१२. संस्था-समाचार		३७
१३. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		३९
१४. पाठकों की प्रतिक्रिया		४०
१५. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

राष्ट्राध्यक्ष और वैदिक चिन्तन

संघ की कार्यपालिका के सर्वोच्च पद पर भारत का राष्ट्रपति संविधान में सुनिश्चित किया गया है। भारत के संविधान के अनुसार समस्त कार्यपालिका शक्ति उसमें निहित होती है। वह निम्नलिखित शपथ के द्वारा अपने कर्त्तव्यों के प्रति आश्वस्त करता है कि, 'मैं, अमुक, ईश्वर की शपथ लेता हूँ। सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञान करता हूँ कि मैं श्रद्धापूर्वक भारत के राष्ट्रपति के पद का कार्यपालन (अथवा राष्ट्रपति के कृत्यों का निर्वहन) करूँगा तथा अपनी पूरी योग्यता से संविधान और विधि का परिरक्षण, संरक्षण और प्रतिरक्षण करूँगा और मैं भारत की जनता की सेवा और कल्याण में निरत रहूँगा।'

वर्तमान में 14वें राष्ट्रपति के लिए चुनाव 17 जुलाई को होना सुनिश्चित हुआ है और 25 जुलाई को शपथ समारोह होगा। वर्तमान में केन्द्र में शासित राजग की ओर से श्री रामनाथ कोविन्द और विपक्षी दल यूपीए की ओर से मीरा कुमार को चुना गया है। जहाँ तक राष्ट्रपति के पद हेतु डाले गये मतों का प्रश्न है वहाँ सत्तासीन दल के उम्मीदवार श्री रामनाथ कोविन्द को चुना जाना लगभग तय माना जा रहा है।

लोकतन्त्र में चुनाव होते हैं और हार और जीत भी उसी के अनुसार होते हैं। दलीय व्यवस्था में लोकतन्त्र की विशेषता यही है कि या तो सर्वसम्मत चयन किया जाये या फिर मतदान द्वारा निर्णय लिया जाए। लेकिन राष्ट्रपति के पद जैसी गरिमा, जो भारत के प्रथम नागरिक के रूप में एक राष्ट्राध्यक्ष को चुना जाना है वहां उम्मीदवारों के व्यक्तिगत आक्षेपों, जाति, प्रान्त और भाषा के आधार पर आलोचना और समालोचना करना नितान्त अस्वीकार्य है। राष्ट्राध्यक्षों के प्रत्याशियों के निर्वाचन में उतनी ही गरिमा और गुरुता का भाव होना चाहिए, जिसमें इस पद की श्रेष्ठता परिलक्षित होती हो।

भारत में कुछ विधि-विशेषज्ञों या राजनीतिविदों की यह राय हो सकती है कि राष्ट्रपति केवल रबर की मुहर मात्र है, लेकिन यह सर्वसामान्य अवधारणा संविधान की भावना के अनुरूप नहीं है। संविधान राष्ट्रपति को सभी तथ्यों, विचार-विमर्शों, विशेषज्ञों, कानूनविदों इत्यादि से राय लेने का अधिकार प्रदान करता है और तत्पश्चात् वह अपने विवेक के अधिकार का उपयोग करता है। चूंकि राष्ट्रपति का पद दलीय राजनीति से उठकर है इसीलिए उसे सम्पूर्ण राष्ट्र के हितों की रक्षा, संरक्षण के दायित्वों का निर्वहन भी करना होता है। महाभारत में कहा गया है कि 'जो हितकारी पुरुष श्रेष्ठ धर्मपूर्वक प्रजापालन करता है वही राजा है-स राजा यः प्रजाः शास्ति साधुकृत्पुरुषर्षभः।'

जातिवाद को उभारकर राष्ट्रपति के चुनाव को तथाकथित दृष्टि से मुद्दा बनाना भारत के संविधान की मर्यादा के अनुकूल नहीं है। प्रबुद्धजनों को तर्कशील बौद्धिकता के द्वारा दलित प्रतिद्वन्द्विता को इस तरह विवेचित करने का औचित्य संदर्भित नहीं हो रहा।

महर्षि दयानन्द ने जन्मना जातीय मनीषा को कभी भी नियामक आदर्श के रूप में न मानकर गुण, कर्म, स्वभाव को आधार बनाकर राष्ट्राध्यक्ष की योग्यता की व्याख्या की है।

प्रसंगवश यह उद्धरण देना उचित होगा कि वेद ने शासनाध्यक्ष को श्रेष्ठ दायित्वों का निर्वाह करने वाला घोषित किया है। इसे दैवीय आधार पर चुना गया पद नहीं बताकर ज्ञान और कर्म के आधार पर सम्पूर्ण राष्ट्र के दायित्वों का निर्वाह करने वाला द्योतित किया है। शासन पर प्रजा का पूर्ण अधिकार दिया गया है जो उसे स्वेच्छाचारी होने नहीं देता।

यह सत्य है कि अभी तक की पूर्व सरकारों ने अपनी अनुकूलता को आधार बनाकर ही राष्ट्रपति को प्रस्तावित किया है। राजनीति में अपने दल के विस्तार

का उद्देश्य तो होना स्वाभाविक ही है, इसलिए भावी चुनावों को दृष्टिगत रखकर ही श्री रामनाथ कोविंद को राजग ने अपना प्रत्याशी बनाया है। राष्ट्रपति के पद पर भले ही कुछ राष्ट्रपतियों की कार्यपद्धति बौद्धिक जाति में आलोचना की पक्षधर रही हो, फिर भी भारत में लोकतान्त्रिक दृष्टि से सभी राष्ट्रपतियों ने एक राष्ट्राध्यक्ष का सही और यथार्थ में दलीय स्थिति से उठकर कर्त्तव्यों का निर्वहन किया है। यह हमारी लोकतान्त्रिक पद्धति के लिए गर्व का विषय है।

महर्षि दयानन्द ने विभिन्न राजाओं को अपने पत्रों के माध्यम से राजा के प्रजा के प्रति अपने पुनीत दायित्वों के निर्वहन की ओर इंगित किया है और राजा के अनियन्त्रित तानाशाही तथा दैवीय स्वरूप को अस्वीकार किया है।

आज वैदिक संस्कृति के आधार पर राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव एचं तत्पश्चात् जाति, भाषा, क्षेत्र, मत, दल इत्यादि के मतवादों से उठकर निरपेक्ष भाव से संविधान के आलोक में कार्य किए जाने की महती आवश्यकता है। परन्तु वैदिक संस्कृति के पुन: प्रसारित होने पर ही यह संभव होगा, तब तक हम आशान्वित ही रहेंगे कि कोई वेदशास्त्रवित् इस पद्धति का पुन: अनुसरण करे-

सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति।। (मनु.)

वेदज्ञान पूर्वक जो-जो नीतियाँ परमात्मा प्रत्येक सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्यों को उपदेश करता है वे ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि करने वाली होती हैं, इससे पृथक् मनुष्य या प्राणीमात्र की उन्नति का अन्य कोई मार्ग नहीं है। एक स्वस्थ समाज के निर्माण के सभी उत्तम साधनों का उपाय वेदोपदिष्ट नियम ही हैं। प्राचीन भारतीय मनीषा और तदनुयायी अद्यतन विद्वत् समाज इस तथ्य को पुनर्पुन: रेखांकित करता रहा है।

राजनीति अर्थात् **राजा की नीति** एवं **राजधर्म** अर्थात् **राजा का धर्म** चिरंतन प्रचारित और प्रसारित विषय है। इसके सम्यक् ज्ञान एवं तदनुसारी अनुप्रयोग के बिना राष्ट्र एवं राष्ट्र के नागरिक सुरक्षित नहीं रहते हैं, धर्मोन्नति की तो कथा ही क्या! अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि ने इसी कारण छठे समुल्लास में वेदानुसारी एवं विविधशास्त्रानुमोदित राजधर्म की अवतरणिका प्रस्तुत की। इससे पूर्व भी ऋषि-मुनियों ने विविध कालों में राजा के धर्मों पर विचार कर अपने-अपने नीति ग्रन्थ प्रस्तुत किए थे।

वर्तमान में भी राजधर्म, राजनीति या शासन संबन्धी नियमों के अन्तर्गत सभी नागरिक स्व-स्व कर्त्तव्यों का पालन करते हुए उन्नति प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। यह शासन-व्यवस्था यद्यपि पूर्णरूपेण वेदानुकूल नहीं है और न ही कुछ सौ वर्ष पूर्व प्रचलित नृप-केंद्रित व्यवस्था है, परन्तु इसका एक पक्ष वेद और महर्षि के मन्तव्य के अनुकुल अवश्य है- **''....किसी एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए किन्तु राजा जो सभापति, तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के अधीन और प्रजा राजसभा के अधीन रहे।''**

महर्षि ने अथर्ववेद के मन्त्र की जो यह व्याख्या सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में की है, यह वर्तमान प्रजातान्त्रिक पद्धति में किंचिद् विकृति के साथ विद्यमान है।

वर्तमान लोकतान्त्रिक पद्धति में राष्ट्रपति एवं प्रधानमन्त्री के पद विशिष्ट गरिमा के साथ प्रतिष्ठापित है। प्रधानमन्त्री को सारी कार्यकारी शक्तियाँ प्राप्त होने के बावजूद राष्ट्रपति को रिपोर्ट करनी होती है, कोई नया कानून बनाए जाने पर राष्ट्रपति से उसकी मंजूरी लेनी होती है, इत्यादि।

इस प्रकार इस पद्धति की विशेषता यही है कि कोई भी स्वेच्छाचारिता की सीमा तक जाने को स्वतन्त्र नहीं है। परस्पर अन्योऽन्याश्रयत्व का गुण इस पद्धति को महर्षि के मन्तव्य के अनुकूल सिद्ध करता है।

वर्तमान में इसी पद्धति के सर्वोत्कृष्ट पद-**राष्ट्रपति** के निर्वाचन की प्रक्रिया जारी है। **- दिनेश**

यज्ञ ही क्यों-२

प्रवचनकर्त्ता - डॉ. धर्मवीर

लेखिका - सुयशा आर्य

पिछले अंक का शेष भाग....

आप हवनकुण्ड को ध्यान से देखें, यह बड़ा ही वैज्ञानिक है, यह पिरामिड का उल्टा रूप है। आप इसे उलट के रख देंगे तो जैसे पिरामिड बने हुए हैं, उस तरह का है। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए कि कम से कम समिधा जलाकर अधिक से अधिक ताप लिया जा सके। जैसा हवनकुण्ड है उसके हिसाब से घी की, सामग्री की, समिधाओं की मात्रा और आकार निश्चित है। यज्ञकुण्ड में धुआँ नहीं उठना चाहिए, उसमें घी और सामग्री इतना डलना चाहिए कि ज्वाला सतत रहे। एक बार स्वामी सत्यप्रकाश जी हमारे कॉलेज में व्याख्यान देने के लिए आए, हमारे एक साथी प्रोफेसर ने सवाल किया-स्वामी जी महाराज! इस धुएं से तो Co_2 होता है, स्वामी जी बोले, तुम कोकाकोला पीते हो, उसमें क्या-क्या होता है? उसमें Co_2 होती है। कोई भी चीज मात्रा में नुकसानदेय नहीं होती, मात्रा से बाहर नुकसानदेय होती है।

घी की विशेषता क्या है? यजुर्वेद का एक मन्त्र है- **घृतेन द्यावा पृथिवी.........विश्व जनस्य छाया।** इसका आध्यात्मिक अर्थ भी कर सकते हैं, आधिभौतिक भी कर सकते हैं कि घी से इस द्युलोक को और पृथ्वीलोक को भर दो। कैसे भरोगे? भरने का एक ही तरीका है कि वस्तु को गैसीय रूप में परिवर्तित कर दें और कोई तरीका नहीं हो सकता। इस वातावरण में जितनी दुर्गन्ध है, जितने विषाणु हैं वो केवल घी नष्ट कर सकता है और घी भी गाय का। बाकी घी तो हमारे विकल्प हैं, मजबूरी है। हम तो पता नहीं क्या-क्या डालते हैं, क्योंकि बाजार से हम क्या लाते हैं, ये ईश्वर ही जानता है। एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा, जो आप देसी घी-देसी घी करते हैं, देसी घी का शौक रखते हैं, क्या गारन्टी है कि आप देसी घी ही खरीदते और खाते हैं। मैंने कहा, एक ही गारन्टी है कि देसी घी के पैसे दे रखे हैं, और क्या गारन्टी है? या तो वो भला आदमी जानता है जो घी बनाता है या ईश्वर जानता है जो देखता है, बाकी तो हम कुछ नहीं कह सकते कि हम क्या खा रहे हैं, क्या नहीं खा रहे हैं। जैसे हम अधिकतम शुद्ध वस्तुओं का खाने में उपयोग करें, वैसे ही अधिकतम शुद्ध वस्तुओं का यज्ञ में उपयोग करें, क्योंकि घृत विषाणुओं को नष्ट करता है और अग्नि दुर्गन्ध के परमाणुओं को छिन्न-भिन्न करता है। इसलिए अग्नि और घृत मिल के वातावरण को शुद्ध करते हैं। हमारी दूसरी वस्तुएँ वातावरण को पुष्ट करती हैं। एक चीज है झाड़ू लगाना, दूसरी है इसे संवारना। अग्नि का काम है परमाणुओं को खंडित कर देना, तोड़ देना। वो घी के परमाणुओं को विभक्त करके सूक्ष्म बना सकता है, लेकिन घी के परमाणुओं का गुण है कि वो विषनाशक हैं इसीलिए वातावरण के विषाक्त और दुर्गन्धित परमाणुओं को वो भेद सकता है। ये गुण किसी और वस्तु में नहीं है। इसीलिए अनिवार्य है कि हम इस वातावरण को जो कि निरन्तर प्रदूषित होता जा रहा है, उसी अनुपात में उसको शुद्ध करते रहें।

मैं कोई भी बात ऐसी नहीं कह रहा हूँ जो अपनी है या नई है या बहुत खोज की गई है। आप ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका पढ़ेंगे तो बहुत विस्तार से स्वामी जी ने बहुत वैज्ञानिक तरीके से इसे स्पष्ट किया है। स्वामी जी ने एक सवाल उठाया है कि हमें यज्ञ क्यों करना चाहिए। दुर्गन्ध तो पशुओं से फैलती है, वनस्पतियों से फैलती है। वे बोले- देखो! प्रकृति से जो दुर्गन्ध फैलती है, प्रकृति उसे स्वयं शुद्ध करती है। प्रकृति में कोई भी चीज गल गई, सड़ गई, तो सूर्य उसको एक चक्र से शुद्ध करता है, लेकिन जब मनुष्य अपनी बुद्धि से किसी बात को बिगाड़ता है तो प्रकृति उसके संशोधन में समर्थ नहीं होती। आप प्लस्टिक बनाते हैं, प्रकृति उसे रिसाइकिल नहीं कर पाती। जानवर हम इकट्ठे रखते हैं, जानवर इकट्ठा अपनी मर्जी से नहीं रहता। हम तेल जलाते हैं, दुर्गन्ध हमारी सुविधा के कारण

हमने की है। हम इकट्ठे रहने के आदी हैं तो भीड़-भाड़ में स्वाभाविक रूप से मलिनता, दुर्गन्ध फैलती है। इसलिए यह किसकी जिम्मेदारी है? मनुष्य ही अकेला बुद्धिमान् प्राणी है जो प्रतिकार करने की क्षमता रखता है। इसलिए यह प्रत्येक मनुष्य का दायित्व है कि जितनी दुर्गन्ध, जितनी मलिनता इस वातावरण में फैलती है, उसका वह निराकरण करे।

कुछ लोग कहते हैं कि क्या होगा थोड़े से हवन करने से? परन्तु यदि हम सब मिलकर थोड़ा-थोड़ा करें तो कितना होता है? अमेरिका को भारत की चिन्ता इसलिये है कि आप थोड़ा-थोड़ा करके बहुत सारा खरीदेंगे। आपको एक बहुत बड़े बाजार के रूप में वो देखता है, वो यह देखता है कि उसकी कुल बिक्री कितनी होने वाली है। लेंगे तो हम दो चार-छः साबुन, लेकिन उसका कितना साबुन बिकेगा? करोड़ों-अरबों रुपये का। वैसे ही हम थोड़ा-थोड़ा ही यदि यज्ञ करेंगे तो हमारा सकल परिणाम क्या होगा? दूसरा लाभ ये कि हमारी प्रवृत्ति संशोधन की होगी। आज हमारी प्रवृत्ति प्रदूषण की है। हम परवाह नहीं करते कि इससे क्या बिगड़ रहा है, हमारे पूर्वजों ने बहुत समझदारी से काम किया था।

आपको गाँव की तरफ ले चलता हूँ। यदि थोड़ी-सी गाँव की पृष्ठभूमि है तो आप मेरी बात से सहमत होंगे। हमारे यहाँ अजमेर में ईसाइयों के बहुत अच्छे हॉस्पिटल और बहुत अच्छे स्कूल हैं। वो कभी-कभी मुझे बुला लेते हैं। उन्होंने एक सर्वधर्म मैत्री संघ बना रखा है। एक व्यक्ति से मेरा परिचय हुआ, उनका नाम था फादर लैसर। परिचय भी क्या हुआ लड़ाई हो गई एक दुकान पर। वो आदमी बहुत सज्जन थे। बात तो इस प्रसंग की नहीं है पर कह देता हूँ। मेरे एक मित्र डॉ. दिनेश मिश्र थे, जो अंग्रेजी के प्राध्यापक थे। राजकीय महाविद्यालय में पढ़ाते थे। उन्होंने अपने भांजे को एक दुकान कराई, मैंने उनको दुकान पर खड़े देखा तो मिलने चला गया। उन्होंने मेरा परिचय फादर लैसर से कराया। फादर लैसर जर्मन मूल के थे। माँ शायद आयरलैण्ड की थीं। उन्होंने परिचय कराते हुए कहा-यह फादर लैसर हैं, बड़े विद्वान् हैं, अंग्रेजी में इन्होंने बहुत सारी पुस्तकें लिखी हैं और ये धर्म प्रचारक हैं। फिर उन्होंने मेरा परिचय कराया-ये संस्कृत के अध्यापक हैं, दयानन्द कॉलेज में पढ़ाते हैं। यह कहते ही फादर लैसर ने मुझसे एक ऐसा वाक्य कहा जिसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता था। बोले यह सरकार संस्कृत पर बहुत पैसा बर्बाद करती है, यह राष्ट्र की हानि है। आप इस विषय में सरकार को एक चिट्ठी लिखो। मुझे एकदम गुस्सा आया। मैंने कहा, फादर लैसर! तुम इस मिट्टी की उपज नहीं हो, तो इस मिट्टी के हित और भले के बारे में कभी नहीं सोच सकते। यदि तुम्हें आँकड़ों पर ही सोचना था तो तुमने अंग्रेजी के बारे में क्यों नहीं सोचा। फादर थोड़ा सहम गए। बोले, नहीं-नहीं प्रोफेसर मेरे कहने का यह मतलब नहीं है, आप ठीक हैं। लेकिन उस व्यक्ति ने सम्बन्ध मुझसे सदैव बनाए रखा। उसके बाद भी उनका मेरा परिचय रहा, वो मुझे मैत्री संघ में ले गए। आज तक भी उनका क्रिसमस का कार्ड आता है, दिपावली पर शुभकामना आती है, यह उस व्यक्ति का गुण है। सारे वनवासियों को उठाकर उन्होंने ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया। सोचेंगे तो लगेगा कि वो कितना बड़ा काम करते हैं।

उन्होंने एक बार मुझे बुलाया तो मैंने उनसे पूछा, आप लोग हॉस्पिटल में, गिरिजाघर में, दूसरी जगहों पर क्या जलाते हो-मोमबत्ती। मैंने पूछा, मोमबत्ती क्यों जलाते हो? यदि मोमबत्ती केवल प्रकाश के लिए जलाते हो तो बिजली के बल्ब जला लिया करो और यदि किसी और कारण से जलाते हो तो आप गलत जलाते हो, क्योंकि यह प्रदूषण को बढ़ाने वाली चीज है। हॉस्पिटल में दिनभर मोमबत्तियाँ जलती हैं-कहते हैं लड़की हुई तो पाँच मोमबत्ती जलाओ, लड़का हुआ तो सात मोमबत्ती जलाओ। सौ-पचास बच्चे तो होते रहते हैं इसलिये दिन भर मोमबत्तियों का ढेर जलता रहता है। लगता है इस पर आपने कभी विचार नहीं किया है, बिना विचारे कर रहे हो आप। लोग तो संकोच कर जाते हैं कि इनको क्यों नाराज किया, इनको क्यों कहा। पर हमसे नाराज हो जायेंगे तो नहीं बुलायेंगे, इससे ज्यादा क्या करेंगे। मैंने कहा, देखो! एक बात सुनो, यह बात हमने जितनी अच्छी समझी है, आप नहीं समझ सके।

आप प्रसन्नता ही तो व्यक्त करते हो ना प्रकाश के माध्यम से? हमारे यहाँ प्रसन्नता व्यक्त करते हैं घी के दीये जलाकर। आप अपनी ग्रामीण पृष्ठभूमि में जाकर देखिये। जब हम प्रसन्न होते हैं तो घी के दीये जलाते हैं। केवल दीये जलाना नहीं बोलते, घी के दीये जलाते हैं। हम सफल होते हैं तो हमारी उँगलियाँ घी में होती है, हम कहते हैं ना पाँचों ऊँगलियाँ घी में हैं और कुछ ज्यादा हो जाए तो सिर कढ़ाई में होता है।

हमारे पूर्वजों ने, हमारे ऋषियों ने इस तथ्य को समझा। वो प्रसन्नता को भी इस तरह से व्यक्त करते थे जिससे पर्यावरण को शुद्ध किया जा सके, दूषित नहीं होना चाहिए। पाश्चात्य संस्कृति ये नहीं समझती कि हम प्रसन्न हो रहे हैं तो इसका दुष्प्रभाव क्या पड़ेगा। हम बहुत प्रसन्न होते हैं तो कुछ मांस खा लेते हैं, दो-चार प्राणियों की हत्या कर लेते हैं, शराब पी लेते हैं, कुछ पैसे का नुकसान कर लेते हैं, कुछ शरीर का, लेकिन वैदिक संस्कृति में जब प्रसन्न होते हैं तो परोपकार करते हैं, घी के दीये जलाते हैं। इससे दो लाभ होते हैं-हम भी प्रसन्न होते हैं और हमारे साथ का वातावरण भी प्रसन्न होता है। ये चिन्तन का फर्क है, यह दर्शन का फर्क है। हम किसी चीज को कैसे अभिव्यक्त करते हैं और सिद्धान्त से अनजान आदमी उसको कैसे अभिव्यक्त करता है। प्रसन्नता तो वह भी अभिव्यक्त करता है, वो भी प्रकट करता है और प्रसन्नता हम भी प्रकट करते हैं। लेकिन आप सदा देखेंगे अपने यहाँ जब भी कोई भला काम होगा तो दान की बात सोची जायेगी, यज्ञ की बात सोची जाएगी, दूसरों को भोजन कराने की बात सोची जाएगी। यदि आप पुरानी परम्परा से परिचित हो तो आपको आश्चर्य होगा कि अपने घर में यदि बेल लगी है तो प्रथम फल पण्डित जी को दिया जायेगा, मतलब हम अपने लिए सोचते ही नहीं हैं। हम घर में किसी भी नई चीज का प्रयोग तब तक नहीं करते जब तक उसे हम दूसरे के लिए नहीं सोच लेते हैं। ये पण्डित जी को दे दो, यह महात्मा जी को दे दो। हमारे परिवेश में कभी गरीब रहता था तो भूखा नहीं मरता था। गरीब रहता था तो कभी बिना कपड़े नहीं रहता था। गरीब रहता था तो आवश्यकताओं से वंचित नहीं रहता था। यह यज्ञ का ही प्रभाव था।

ऋषि मेला २०१७ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला २७, २८, २९ अक्टूबर शुक्र, शनि, रविवार २०१७ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- **१.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाईयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी।

सामाजिक समरसता अभियान- एक सार्थक प्रयास

रामनिवास 'गुणग्राहक'

वेद के माध्यम से परमपिता परमात्मा ने अपने अमर पुत्र मानव के कल्याण के लिए जिस विद्या का प्रकाश किया है, वही वेद-विद्या सम्पूर्ण मानव जाति के समस्त कार्य-व्यवहार का मूल आधार है। समाज संरचना की बात करें तो इसके लिए वर्णाश्रम व्यवस्था के स्वर्णिम सिद्धान्त वेद और वैदिक साहित्य में बिखरे पड़े हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में समाज को जिन चार भागों में बाँटा है, चाहे उनके कार्य-व्यवहार एक-दूसरे से भिन्न हों, लेकिन उन सबकी एक-दूसरे के लिए सतत् आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इन सबके पारस्परिक प्रेम व अनुराग की बात वेद में स्पष्ट शब्दों में मिलती है। ऋग्वेद में आता है-

रुचं नो ब्राह्मणेषु धेहि रुचं राजसु नः कृधि।
रुचं वैश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्।।

-(ऋ. १०.१२८.११)

मन्त्र के शब्द इतने सरल और सबके लिए जाने-पहचाने हैं कि अर्थ लिखना आवश्यक नहीं लगता। यहाँ स्पष्ट शब्दों में ब्राह्मण, क्षत्रिय (राजसु), वैश्य और शूद्र के प्रति रुचि अर्थात् प्रेम-आकर्षण की प्रार्थना है। आज के संकीर्ण जातिवाद से त्रस्त मानव-मन को महर्षि दयानन्द की वेदोक्त शिक्षा बड़ी अटपटी और अपच लगेगी कि ब्राह्मण आदि द्विजों के घर का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य भोजन बनाना शूद्रों का काम है। इससे अधिक अपनेपन और प्रेम वाला पारस्परिक सम्बन्ध कहाँ मिलेगा? इसके साथ ही सामाजिक संरचना के आदि जनक महर्षि मनु व्यवस्था देते हैं कि ब्राह्मण के घर में जन्म लेने वाला बालक अपने गुण, कर्म, स्वभाव और प्रतिभा की न्यूनता के कारण क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र हो सकता है। इसी प्रकार शूद्र कुल में जन्मे बालक-बालिकाएँ गुण, कर्म, स्वभाव और बौद्धिक प्रतिभा की उत्तमता से वैश्य, क्षत्रिय वा ब्राह्मण बन सकते हैं। कुल मिलाकर बड़ी स्पष्ट और सीधी-सी बात है कि वर्ण का निर्धारण शिक्षा-प्राप्ति के बाद आचार्य द्वारा किया जाता है तथा वर्ण-निर्धारण के बाद सभी वर्ण पूर्वोक्त वेद-मन्त्रानुसार परस्पर प्रेम, सौहार्द व अटूट अपनेपन के साथ मिलकर रहते हैं। आज का प्रचलित जातिवाद और इसके साथ लगे हुए छुआछूत और ऊँच-नीच का भेदभाव जैसे अमानवीय दोष किसी भी सामाजिक संरचना के लिए कलंक के समान हैं। इसी विखण्डनकारी कलंक को दूर करने के लिए आर्यसमाज बड़े प्रभावी ढंग से सामाजिक समरसता का व्यावहारिक सन्देश देने वाले अभियान चलाता रहता है। महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अपना महनीय दायित्व समझकर इस दिशा में काम करती रही है। महर्षि के अनुयायी और सच्चे राष्ट्रभक्त को जन्मना जातिवाद के विरुद्ध महर्षि के वेदोक्त सिद्धान्तों-आदर्शों को लेकर सामाजिक समरसता के लिए काम करना ही चाहिए।

११ मार्च को मथुरा गेट स्थित वाल्मीकि बस्ती में परोपकारिणी सभा ने सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से वञ्चित वाल्मीकि समाज के सैकड़ों स्त्री-पुरुषों व युवाओं के लिए सामूहिक यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ के बाद सभा के पदाधिकारियों व कार्यकर्त्ताओं तथा आगन्तुक अतिथियों ने वाल्मीकि समाज के साथ मिलकर सहभोज करके एक मानवीय आदर्श प्रस्तुत किया। परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि जी एवं माननीया श्रीमती ज्योत्स्ना जी की प्रेरणा से मैं वाल्मीकि समाज के प्रमुख व्यक्तियों के सतत् सम्पर्क में रहा और उनसे मिलकर दिनांक ६ से ११ जून तक एक **जीवन-निर्माण शिविर** का आयोजन किया। बस्ती के पुराने शिव मन्दिर के पुजारी अरुणानन्द जी, मुकेश जी, कैलाश जी व गणेश जी के विशेष सहयोग से यह शिविर बहुत उत्साहपूर्वक चला। शिविर में प्रतिदिन यज्ञ, भजन के साथ गायत्री मन्त्र बोलना, नशे से दूर रहना, शिक्षा के प्रति जागरुक करना तथा समाज की मुख्यधारा से जुड़कर सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से सबल व सक्षम

बनाना आदि विविध जीवनोपयोगी बातें सिखाने-समझाने का क्रम चलता रहा। वैसे तो इस शिविर में युवा वर्ग को मुख्यरूप से जोड़ने का प्रयास रहा, मगर बस्ती में मैंने कैलाश जी आदि के साथ मिलकर लोगों से सम्पर्क किया तो १०-१५ की संख्या स्त्री-पुरुषों ने भी शिविर में नियमित भाग लिया। कुल मिलाकर यह शिविर प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से अत्यन्त सफल व सार्थक रहा।

शिविर का समापन ११ जून को सायं ५ से ७.३० बजे तक चला। नियमित प्रशिक्षण के अतिरिक्त परोपकारिणी सभा अजमेर से पधारे श्री ओममुनि जी का विशेष उद्‌बोधन व काबरा जी का काव्यपाठ भी हुआ। शिविर में दी गई शिक्षाओं से सम्बन्धित प्रश्न शिविरार्थी युवक-युवतियों से पूछे गये और सही उत्तर देने वाले बालकों को पुस्तकें, कॉपी, पेन आदि का विशेष पुरस्कार दिया गया। सभा की ओर से मन्त्री जी महर्षि दयानन्द की शिक्षा देने वाले कलैण्डर लेकर आये। वे कलैण्डर भी सबको दिये गये। इस शिविर के आयोजन व संचालन में **पं. लेखराम वैदिक मिशन** के लिए समर्पित भाव से अहर्निश कार्य करने वाले श्री लक्ष्मण जी 'जिज्ञासु' का मौन, मगर विशेष सहयोग रहा। वे अपना मूल्यवान् समय निकालकर एक दिन पूर्व ही भरतपुर आ गए तथा समापन-समारोह में आधारभूत भूमिका निभाई। शिविर संचालन में भरतपुर निवासी श्री जगदीश जी आर्य ने कन्धे से कन्धा मिलाकर मेरा सहयोग किया तथा मन्दिर के पुजारी श्री अरुणानन्द का सहयोग भी सराहनीय रहा। समापन समारोह में बस्ती के प्रायः सभी स्त्री-पुरुषों व शिविरार्थियों ने समय-समय पर ऐसे ही शिविर लगाये जाने का आग्रह किया। यज्ञ प्रसाद के रूप में हलवा खाकर मीठे मुँह व मुदित मन से एक पुण्य कार्य की मधुर स्मृतियाँ लेकर सब स्व-स्थानों के लिए प्रस्थान कर गये।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को स्थान दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हों। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु, वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

जैसे पवन सब को सुख देता हुआ सब के रहने का स्थान हो रहा है वैसे ही विद्वान् को होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४१

कुछ तड़प–कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

जब धर्मवीर जी गुम हो गये– परोपकारी के पाठक इस बार इस स्तम्भ का प्रथम उपशीर्षक पढ़कर सोच में पड़ जायेंगे कि धर्मवीर जी एक बार गुम हो गये थे। इस विचित्र घटना के दो साक्षी हैं। एक हैं श्रीमती ज्योत्स्ना जी और दूसरा इन पंक्तियों का लेखक। हम केरल यात्रा पर थे। धर्मवीर जी ने शंकराचार्य जी के जन्म स्थान कालड़ी जाने की इच्छा व्यक्त की। हमने कालड़ी देख रखा था फिर भी साथ हो लिये। हम जानते थे कि वहाँ कोई प्रतिष्ठित विद्वान्, धर्मशास्त्रों का मर्मज्ञ पण्डित और संस्कृत बोलने में सक्षम पण्डित नहीं है। हमने मान्य धर्मवीर जी से कहा, आपको यहाँ वालों से और यात्रियों से केवल संस्कृत में ही वार्तालाप करना है और जो कोई आस-पास से निकले हमें उसको नमस्ते अवश्य करनी है। अनेक बार केरल के आर-पार जाने से कुछ लोग ऐसे स्थानों पर हमें पहचानते-जानते हैं कि यह आर्यसमाजी है।

संस्कृत बड़ी सहजता से बोलने तथा अपने वेश से थोड़े ही समय में सबको धर्मवीर जी के पाण्डित्य का, गम्भीर ज्ञान का पता चल गया। हम तीनों श्री शंकराचार्य के स्मारक में नदी तट पर घूम रहे थे कि ज्योत्स्ना जी को धर्मवीर जी कहीं दिखाई न दिये। आपने इधर-उधर उन्हें खोजा। जब कुछ पता न चला तो घबराकर मेरा पता किया। आपने कहा, "धर्मवीर जी मिल नहीं रहे। कहाँ गये?"

हमने कहा, उन्होंने जाना कहाँ है? कहीं किसी साधु से, पण्डित से बातचीत कर रहे होंगे या फिर पुस्तकें क्रय करने लग गये होंगे। हमने पुस्तकों के दोनों स्टॉल देख लिये। वहाँ के पण्डितों की टोलियाँ भी देख लीं हमें हमारे धर्मवीर जी न मिले।

इस लेखक को सूझा कि हो न हो धर्मवीर जी यहाँ की वेद पाठशाला के भवन में गये होंगे। वेद से जुड़ा प्रत्येक स्थान आर्यों की दुर्बलता है। चलो! हम वहाँ जाकर पता करते हैं। हम ज्योत्स्ना जी को लेकर वहाँ जा पहुँचे। इस लेखक को पता था कि वेद के आस-पास कोई स्त्री नहीं जा सकती तो भी हमने इन्हें कहा, आप भी चलें। हम वहाँ उस परिसर में गये। भीतर के (पाठशाला) कमरों के द्वार, खिड़कियाँ सब बन्द कर रखे थे। हम दोनों बारी-बारी धर्मवीर जी, धर्मवीर जी पुकारने लगे। इस लेखक को समझ में आ गया कि एक महिला की आवाज पहचानने से कोई बाहर नहीं निकल रहा।

हम निराश पाठशाला से बाहर आ गये। थोड़ी देर में धर्मवीर जी हमारी खोज कहानी सुनकर अपने स्वभाव के अनुसार खिलखिलाकर, खूब खुलकर हँसे।

स्वामी सत्यप्रकाशजी के लेख की तस्करी– यदि कोई अन्य मतावलम्बी स्वामी दर्शनानन्द जी, पं. चमूपति जी का कोई लेख या पुस्तक अपने नाम से प्रचारित कर दे तो हम हर्षित ही होंगे। तस्करी अच्छी बात तो नहीं, परन्तु बुराई से भलाई उपजे तो क्या बुरा है। वेद-प्रचार होना तो श्रेष्ठ कर्म है। मदरसों में मौलवी मुहम्मद इस्माइल जी की पुस्तक में भक्त अमींचन्द का एक गीत–**'उठो सोने वालो सहर हो गई'** पढ़ाया और गाया जाता है। इस पर हमने लिखा था अरे भाई सारा सत्यार्थप्रकाश मौलवी सनाउल्ला के नाम से छाप कर प्रचारित कर दो। हम स्वागत करेंगे। 'वेद प्रकाश' मासिक में श्री अजय आर्य ने ओशो की किसी पुस्तक से मांसाहार के खण्डन में और शाकाहार के मण्डन में एक अवतरण छापा है। यह मौलिक, वैज्ञानिक तथा अत्यन्त स्वाभाविक चिन्तन है। हम समझते हैं एक आर्य होने के नाते शाकाहार का प्रचार अजय जी की दुर्बलता है। हम सबकी ऐसी ही भावना है, परन्तु यह चोरी का माल है। यह चिन्तन हमारे पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी का है।

आर्यो! आप अपने महान् विचारक स्वामी सत्यप्रकाश जी के मांसाहार के खण्डन व शाकाहार के मण्डन में विचार क्यों प्रचारित नहीं करते? रजनीश ने स्वामी जी का नाम लिये बिना हमारा सारा माल चुरा लिया। लो! हम बताते हैं स्वामी जी ने लिखा है–कौन बूचड़खाने की सैर को जाता है? कौन मन को बहलाने के लिये कसाइयों की

मार्केट में जाता है? विश्व का शाकाहार विषयक पर्याप्त साहित्य हमने पढ़ा है। स्वामी सत्यप्रकाश जी, पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय तथा हमारे माननीय वैज्ञानिक मिशनरी डॉ. हरिश्चन्द्र जी का शाकाहार विषयक साहित्य सर्वश्रेष्ठ व बेजोड़ है। ईसाइयों का ग्रन्थ New Health and longevity भी उत्तम है, परन्तु हमारे स्वामी जी के चिन्तन व मौलिक तर्कों पर कुछ लिखने में हमारी लेखनी अक्षम है। आर्यो! अपने पूज्य पुरुषों के साहित्य को महत्त्व दो। रजनीश के एक सद्‌विचार के साथ दस कुविचार भी घुसेंगे। यह सोच लो।

ब्रह्मसमाजी नेता ने ख़ूब कहा- पंचकूला आर्यसमाज में हमने श्री महात्मा हंसराज जी द्वारा वर्णित एक हृदयस्पर्शी प्रसंग सुनाया। गुणियों को यह बहुत अच्छा लगा। महात्मा जी को श्री ला. साईंदास जी ने सुनाया था कि लाहौर में ऋषि दयानन्द जी की ईश्वर की सत्ता तथा उसकी ही उपासना करनी योग्य है विषय पर व्याख्यान सुनकर श्रोता मन्त्रमुग्ध हो कर घरों को जाने लगे तो कई श्रोता अपनी-अपनी प्रतिक्रिया दे रहे थे। एक ब्रह्मसमाजी नेता ने तब कहा-

''मेरा तो अब तक का सारा जीवन ही व्यर्थ गया''

क्यों? इसलिये कि जैसे आज स्वामी दयानन्द जी ने ईश्वरेतर पूजा, जड़-पूजा, मूर्तिपूजा का खण्डन किया है, मैंने कभी नहीं किया। इस पाप का ऐसे ही खण्डन होना चाहिये। उस ब्रह्मसमाजी नेता का नाम महात्मा जी ने नहीं लिखा। हमारा मत है वह पंजाब ब्रह्मसमाज के प्रधान लाला काशीराम ही हो सकते हैं।

पारब्रह्म की मूर्ति कहाँ है?- पंचकूला में श्रोताओं को यह सुनकर आश्चर्य हुआ और बहुत अच्छा लगा कि देश में पारब्रह्म का एक ही मन्दिर है और वह केरल में है, परन्तु वहाँ पारब्रह्म की प्रतिमा नहीं है। पूछा क्यों? पारब्रह्म की कहीं मूर्ति नहीं मिलेगी। काशी जैसे नगर में भी नहीं मिलेगी। निरञ्जनदेव तीर्थ नाम के शंकराचार्य जी ने एक बार 'कल्याण' में लिखा था ओ३म् केवल है केवल ही रहेगा। अर्थात् वह एक है आप के परिवार में भी आप अकेले रह जायेंगे सो राम-राम जपा करो। यह था उसका आशय और जो हनुमान चालीसा का पाठ करे वह क्या केवल नहीं रहेगा? अब तो धड़ाधड़ शनि मन्दिर, साईंबाबा मन्दिर किस-किस नगर में हैं? सोचो।

ये प्रसंग मुखरित (Highlight) करें- बेगूसराय बिहार में सुप्रसिद्ध आर्य डॉक्टर श्री अशोककुमार जी गुप्त ने हृदय खोलकर ऋषि जीवन, आर्य साहित्य तथा आर्यसमाज के इतिहास की चर्चा छेड़कर हमें कहा कि आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती-सम्पूर्ण जीवन चरित्र का सम्पादन व अनुवाद करते हुये अपनी टिप्पणियों तथा अपने द्वारा लिखे गये नये-नये अध्यायों में इतनी खोजपूर्ण सामग्री व तथ्य दे दिये हैं कि ऋषि जीवन पर किये जाने वाले प्रत्येक आक्षेप का उत्तर मिल जाता है। कई विशेष घटनाओं व तथ्यों को आपने अपनी सशक्त लेखन शैली से उजागर किया है। अभी-अभी हमें आर्यसमाज पंचकूला (हरियाणा) जाने का अवसर मिला। व्याख्यान के पश्चात् एक प्रबुद्ध आर्य ने कई सज्जनों के सामने यह कहा कि आपने जो **यह कहा कि स्वामी विवेकानन्द अंग्रेजी जानते थे अंग्रेज को नहीं, ऋषि दयानन्द अंग्रेज को जानते थे अंग्रेजी नहीं जानते थे।** इसको खोलकर बतावें।

हमने कहा देश के लिये, धर्म के लिये, जाति के लिये ऋषि ने जीवन वार दिया। आर्य फांसियों पर चढ़ाये गये। जेलों में प्राण दे गये। गोलियों से भूने गये। बच्चे, बूढ़े, जवान, साधु, गृहस्थी व आर्य देवियाँ भी जीवित जलाई गईं। किसी संस्था, संगठन, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन के एक नेता का नाम बतायें जो फांसी पर चढ़ाया गया। ऋषि के क्रान्तिकारियों के नाम और क्रान्तिकारियों के ऋषि के नाम पत्र छपे मिलते हैं। स्वामी विवेकानन्द का कोई एक पत्र किसी क्रान्तिकारी के नाम दिखा दें। यह उत्तर पाकर सब दंग रह गये।

एक ने पूछा ऋषि के ऐसे पत्र कहाँ हैं? इस प्रश्न को सुनकर हमें बड़ा धक्का लगा। हमने अपने ग्रन्थों में और अपने लेखों में इस तथ्य को उजागर किया। आर्य जनता फिर भी सोई पड़ी है। आर्य पत्रों में कुछ लेखकों का पेटन्ट विषय ही क्रान्तिकारी वीरों की जीवनियाँ है। उन्हें बताया कि अजमेर से ऋषि का पत्र-व्यवहार मंगवा लें। इन-इन तथ्यों को सब मुखरित करें।

१. गोरे पादरी कुक का भारत में आतंक था। अंग्रेजी

पठित वर्ग की उसके सामने बोलती बन्द थी। वह स्वल्प काल में भारत को ईसाई बनाने की घोषणा कर रहा था। ऋषि के सामने आने का साहस न कर सका। पूना भाग गया। पूना से सात समुद्र पार भाग खड़ा हुआ। किसी और साधु, विद्वान् महात्मा का कोई ऐसा प्रसंग बतायें।

२. सनातनी विद्वान् नेता पं. गंगाप्रसाद शास्त्री जी दिल्ली ने लिखा है पादरी नीलकण्ठ शास्त्री काशी, प्रयाग, हरिद्वार आदि तीर्थों पर घूम-घूम कर हिन्दुओं को ईसाई बनाता था। काशी के, प्रयाग के पण्डित उसका सामना न कर सके। ऋषि दयानन्द ने उसकी बोलती बन्द कर दी। वह आर्यसमाज के सामने टिक न सका।

३. इसी महाराष्ट्र निवासी ब्राह्मण पादरी ने महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र दलीप सिंह को ईसाई बनाकर गोरी मेम से उसकी शादी करवा दी। सिखों ने पंजाब आने पर उससे टक्कर न ली। आर्यों ने पंजाब से भगा दिया। इस सेवक ने पं. गंगाप्रसाद शास्त्री के दर्शन किये, उन्हें सुना भी।

४. ऋषि दयानन्द ही इस देश के एकमेव धर्मगुरु, नेता व विचारक थे। जिन्होंने १८५७ के विप्लव को न तो ग़दर कहा और न लिखा। सर सैयद आदि ने ग़दर पर ग्रन्थ लिख डाले।

५. ऋषि दयानन्द को भुज कच्छ के अवयस्क राजा और वहाँ की दीन-दरिद्र प्रजा की चिन्ता सताती थी। दलीप सिंह भी अवयस्क था। भुज का राजा भी ईसाई न बना लिया जावे। ऋषि ने अपने एक विशेष भक्त के हाथ इस विषय का एक पत्र उस समय के दो बड़े व्यक्तियों को भेजा। यह पत्र डाक से नहीं भेजा गया। इतनी सावधानी बर्ती गई। देश में और किस को भुज कच्छ की पीड़ा अनुभव हुई?

६. हिन्दुओं ने पहली बार परकीय मतों के मौलवियों व पादरियों को बिना सूचना दिये चाँदापुर शास्त्रार्थ में पीठ दिखाकर ऋषि के आगे भागते देखा। यह राधास्वामी मत के गुरु हुजूर जी महाराज ने लिखा है।

७. ऋषि के घोर निन्दक जीयालाल ने कर्नल ऑलकॉट के झूठ की पोल खोलते हुये महर्षि दयानन्द के कथन को सच्चा-सच्चा सिद्ध किया और ऋषि को उच्च शिक्षित लोगों को धर्मच्युत होने से बचाने वाला बताया है।

किसे कहें? क्या कहें?- हम कई बार लिख चुके हैं कि जिस विषय का ज्ञान न हो उस पर कुछ लिखने का दुस्साहस करना मूर्खता है और समाज के लिये भी घातक है, परन्तु 'रोग बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की' वाली बात है हमसे अनेक ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं कि अमुक ने यह लिखा है, उस पत्र में यह छपा है, क्या यह ठीक है। प्रश्न उठाने वालों की आपत्ति ठीक होती है। किसी ने दिल्ली के 'शुद्धि' साप्ताहिक में वीर सावरकर जी पर लेख दिया है। प्रश्नकर्त्ता ने कहा कि आपने वीर सावरकर के महाशय राजपाल जी पर लेख को उद्धृत करते हुये लिखा है कि आर्यसमाज के सर्वाधिक बलिदानियों पर एक ही राजनेता ने लिखा है और वह है सावरकर। उनके तो एक पत्र का नाम ही श्रद्धानन्द था। आर्यसमाज में हर कोई इतिहासज्ञता दिखाने पर तुला है। बिना श्रम किये यह कैसे सम्भव है?

एक ने गुरु विरजानन्द जी पर उत्तराखण्ड से एक लम्बा लेख पत्रों पर थोप दिया। एक पाठक की पकड़ में लेख आ गया। उससे हमें पता चला कि लेखक जी ने डॉ. रामप्रकाश जी की तथा इस लेखक द्वारा लिखी दण्डी जी की जीवनी देखी तक नहीं। श्री मुकन्द दुबे का तो नाम तक नहीं सुना। नई-नई खोज व तथ्य उस महाज्ञानी को पता ही नहीं। गुरु विरजानन्द जी के जन्म का वर्ष तक वह नहीं जानता। उसे क्या कहा जावे?

पं. लोकनाथ जी भी कुछ व्यक्तियों का प्रिय विषय है। एक लेख का पता चला कि लेखक जी ने इतिहास पर चढ़ाई करते हुये पण्डित जी को सिंधी बताया है। यह भी लिख मारा कि आर्यसमाज ने तो उन्हें भुला दिया है। उनका फोटो तक नहीं मिलता।

इन गप्पों को परोसने का क्या लाभ? उनकी जीवनी छप चुकी है। पण्डित जी का चित्र भी छापा गया है। हमने पूज्य पण्डित जी के सैकड़ों बार दर्शन किये। उनके परिवार वालों को यह पता नहीं था कि पण्डित जी कांग्रेस के जिला लायलपुर के सचिव रहे। उन्हें यह जानकारी देने वाले ने हमारा नाम लेकर इसका प्रमाण दिया तो वह गदगद हो गये। उनके गांव के खेत श्री पं. शान्तिप्रकाश जी के ग्राम के खेतों से लगे हुये थे। सोनीपत, दिल्ली व रोहतक,

गुड़गांव में उनके ग्राम के लोगों से पूछ लेते तो यह व्यर्थ की कहानी न गढ़नी पड़ती।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उर्दू व हिन्दी दोनों भाषाओं में अपनी आत्मकथा लिखी है। कई बातें उर्दू में हैं हिन्दी में नहीं। **कुछ सामग्री हिन्दी में है उर्दू में नहीं। इतिहास प्रदूषण का जिन्हें चस्का है वे तो झट से यह फतवा दे देंगे कि स्वामी जी के विचार बदल गये इसलिये जो सामग्री या घटनायें मिथ्या थीं अप्रामाणिक थीं वे बाद में निकाल दीं।** यह सस्ती सम्मति (Cheap opinion) आर्यसमाज के लिये बहुत घातक है। इतिहास भी एक शास्त्र है। मुँहजुबानी इतिहास लिखकर कोई इतिहासकार नहीं बन सकता। आर्यसमाज में यही हो रहा है। हम क्या कहें? किसे कहें। आचार्य उदयवीर जी क्रान्तिकारियों के गुरु रहे। यह इन इतिहासकारों को पता न चला। **श्री पं. शान्तिप्रकाश जी को कारागार में पाँवों में बेड़ियाँ डाली गईं। यह किसने लिखा? क्रान्तिवीर शहीद प्रताप सिंह बारहट का नाम तक ये लोग नहीं लेते।**

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य, उत्तम शिक्षा, विद्या, शरीर और आत्मा का बल, आरोग्य, पुरुषार्थ, ऐश्वर्य, सज्जनों का संग, आलस्य का त्याग, यम-नियम और उत्तम सहाय्य के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता। **- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१**

आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में स्थिर-निधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करते समय तीन उद्देश्य रखे थे-

१. वेद और वेदांगादि शास्त्रों के प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने, छापने-छपवाने आदि में, **२**. वेदोक्त-धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक-मण्डली नियत करके देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग कराने आदि में **३**. आर्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा में व्यय करें और करावें।

इन कार्यों को करने के लिये सभा का वर्तमान मासिक व्यय लगभग १२ लाख रुपये है, जो कि आर्यजनों के दान पर ही निर्भर है। परोपकारिणी सभा के कार्यकारिणी अधिवेशन सं. २२९ एवं साधारण अधिवेशन सं. १२० के प्रस्ताव १३ में आचार्य धर्मवीर जी द्वारा प्रारम्भ किये गये बृहत् प्रकल्पों (प्रकाशन, प्रचार, अध्यापन आदि) के लिये आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रुपये की स्थिर-निधि बनाने का संकल्प लिया गया है। आर्यजनों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर आचार्य जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

मन्त्री

जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन-पाठन रूप यज्ञ कर्म्म करने वाला मनुष्य है वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा संतोष करने वाला होता है इस से ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२७

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाउस के सामने,

जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

कंठ की कराह

सोमेश 'पाठक'

कोकिला की कूक या कराह किसी कण्ठ की,
कि कवि के कवित्त में सुनाई वही देता है।
हो अनाद नाद या हो नाद किसी नद्य का,
कि शब्द भी अशब्द को सफाई यही देता है।
धर्म की वो धार 'धर्मवीर' सा धरा पे अब,
दिग् औ दिगन्त में दिखाई नहीं देता है।

वेद का वो विज्ञ और वेद की वो वेदता,
है दिव्यता की दिव्यता और देवता का देवता।
अखण्ड का वो खण्ड और खण्ड की अखण्डता,
कि ज्ञान का प्रदीप पाण्डित्य की प्रचण्डता।
बखान क्या करे कि गुणगान क्या करे कोई,
बेबाक हो के वक्त भी दुहाई यही देता है।
धर्म की वो धार.......

पक्ष बोलते थे व विपक्ष बोलते थे,
हो गीदड़ों में हलचलें जो सिंह ललकार दे।
मञ्च गूँजते थे जब इस सिंह की दहाड़ से,
मजाल क्या कि भीड़ में पलक भी कोई मार दे।
पर अब कहाँ वो बात हाय! अनभ्र वज्रपात,
दिल भी आंसुओं को अब विदाई नहीं देता है।
धर्म की वो धार........

देश को जरुरतें हैं आप जैसे वीरों की,
धीर, गम्भीर, शमशीर, दिलगीरों की।
हम पुकारते हैं और पुकारता है ये जहाँ,
पुकारती कली-कली पुकारता है बागबाँ।
ईश! ये पुकार काश पूरी हो हमारी कभी,
अब जगह-जगह तो बस सुनाई यही देता है
धर्म की वो धार.........

राजा और प्रजाजन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

ऐतिहासिक कलम....

स्त्री शिक्षा

आचार्य उदयवीर शास्त्री

आधुनिक 'कपिल' की उपाधि से विख्यात् आर्यसमाज के दार्शनिक विद्वान् आचार्य उदयवीर शास्त्री ने लेखन का अद्वितीय कार्य किया है। उनके लेख तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहे। उनकी पुस्तकें तो आज उपलब्ध हैं, परन्तु सर्वजनोपयोगी विषयों पर प्रकाशित उनके लेख आज जन सामान्य से अछूते ही हैं। उनके ज्ञान-सागर से प्राप्त कुछ मोतियों को परोपकारी लेखमाला के रूप में प्रकाशित कर रहा है। आशा है पाठक इससे लाभ उठायेंगे। **-सम्पादक**

प्राचीन भारत में शिक्षा सम्बन्धी विषय का निरूपण समाप्त करने के पहले स्त्री शिक्षा के विषय में कुछ शब्द कह देना आवश्यक होगा। उस समय स्त्री शिक्षा के प्रति समाज के रुख का जानना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा यह प्रतिपादन अधूरा ही रह जायेगा। रामायण और महाभारत काल में उच्च वर्णों की स्त्रियों को शिक्षा देने की प्रथा थी, यह निश्चित रूप से ज्ञात होता है। यह कहना अत्यन्त कठिन है कि बालकों की तरह कन्याओं के लिये भी घर से बाहर गुरुकुलों में जाकर वहीं निवास करते हुए शिक्षा का प्रबन्ध था। बालकों के लिये शिक्षा-आश्रमों की तरह कन्याओं के लिये किसी ऐसे आश्रम का रामायण महाभारत से पता नहीं लगता। प्राय: पिता के घर में ही उनकी शिक्षा के लिये प्रबन्ध रहता था। ऐसी शिक्षा साधारण रूप से लिखने-पढ़ने तक सीमित रहती थी। पुरुषों की शिक्षा में भी यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक पढ़ने वाला व्यक्ति विद्या का पारंगत हो जावे, ऐसी स्थिति तो बिरले ही पुरुषों में देखी जाती है। फिर भी पुरुषों के लिये विद्या प्राप्ति के जितने साधनों का पता लगा है, कन्याओं के लिये ऐसे साधन व अवसरों का उल्लेख कहीं नहीं मिलता। घर में रहते हुए शिक्षा का प्रबन्ध इतनी उच्च कोटि का होना सम्भव नहीं रहता था। फिर भी अनेक उच्च कोटि की विदुषी महिलाओं का उल्लेख रामायण महाभारत में उपलब्ध है।

सुलभा जैसी तत्त्वज्ञा महिला का वर्णन महाभारत में है। उसने जनक की राजसभा में गहन दार्शनिक शास्त्र की कठिन ग्रन्थियों को सुलझाने की चर्चा में सफलतापूर्वक भाग लिया (महा. १२/३२५)। इसी प्रकार अनुसूया और गार्गी आदि का भी उल्लेख है। द्रोपदी के वर्णन में उसे 'पण्डिता' बताया गया है (वन. २७)। वनवास के समय युधिष्ठिर के साथ द्रोपदी का युद्धोद्योग के लिये संभाषण उसकी राजनीतिज्ञता और वाक्चातुरी का स्पष्ट प्रमाण है। कन्याओं के लिए ऐसी शिक्षा का प्रबन्ध भी घरों में ही रहता था। द्रोपदी ने इस प्रसंग में स्वयं कहा है कि मैंने ये सब बातें घर में रहते हुए ही एक ऋषि के द्वारा जानी थीं। इससे स्पष्ट है कि वयस्क एवं सदाचारी व्यक्तियों को कन्याओं की शिक्षा के लिये पिता के घर में अवसर दिया जाता था। प्राय: ऐसा प्रबन्ध राजघरानों और उच्चकुलीन धनी घरों में ही सम्भव होता था। राजपरिवारों में साधारण पढ़ाई-लिखाई के साथ राजनीति, समाजशास्त्र तथा विशेष रूप से संगीत की शिक्षा के लिये समस्त सुविधा प्रस्तुत की जाती थी। जिसमें गीत नृत्य और वादित्र सब सम्मिलित रहता था। इन सब के साथ धार्मिक शिक्षा भी आवश्यक रहती थी।

विराट पर्व के वर्णन से संगीत जैसी ललित कलाओं की शिक्षा के सम्बन्ध में एक विशेष प्रकाश पड़ता है। विराट राजा की कन्या उत्तरा को संगीत की शिक्षा देने के लिये बृहन्नला को नियुक्त किया गया था। इससे प्रतीत होता है कि उस काल में राजकुमारियों को गाना-नाचना आदि भी सिखलाया जाता था। आजकल साधारण घरानों में भी ऐसी शिक्षा को प्रशंसनीय नहीं समझा जाता। महाभारत काल में न केवल राजकुमारियों व प्रतिष्ठित धनी परिवारों की कन्याओं के लिये, प्रत्युत साधारण जनता की बालिकाओं के लिए भी इस प्रबन्ध से लाभ उठाने का अवसर दिया जाता था। विराट के महलों में इसकी शिक्षा के लिये एक अलग नृत्यशाला बनवाये जाने का वर्णन है। यह आवश्यक है कि नृत्य आदि सिखलाये जाने के लिये

एक अच्छा विस्तृत स्थान होना चाहिये। तब ऐसी शिक्षा का प्रबन्ध घर पर करना सम्पन्न व्यक्तियों का ही कार्य हो सकता था। सम्भव है, जनसमाज की ओर से इसके लिये कुछ सामूहिक प्रबन्ध रहता हो। यह शिक्षा कुमारियों को दी जाती थी और विवाह के समय उनके जो विशेष गुण बतलाए जाते थे, उनमें यह भी एक माननीय गुण समझा जाता था। उत्तरा के साथ-साथ महलों की और बाहर की भी अन्य अनेक कन्याएं संगीत की शिक्षा ग्रहण करती थीं। महाभारत में वहाँ लिखा है-'**सुताश्च मे वर्त्तय याश्च तादृशीः। कुमारीपुरमुत्ससर्ज तम्।**' प्रथम वाक्य में विराट राजा के आदेश का स्पष्ट उल्लेख है कि मेरी पुत्रियों को अर्थात् राजमहल की जितनी कन्याएं हैं, उनको तथा वैसी ही अन्य प्रजाजन की कन्याओं को नृत्य शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया जावे। शिक्षा के अनन्तर अपने-अपने घर जाने के लिये उनकी छुट्टी का निर्देश है। वहाँ 'कुमारीपुरम्' पद का प्रयोग किया गया है। जिसका यह अभिप्राय स्पष्ट होता है कि नृत्य सीखने वाली कन्याओं की वहाँ इतनी अधिक संख्या थी कि उसको प्रकट करने के लिये 'पुरम्' पद का उपयोग करना पड़ा। नृत्य सीखने वाली कन्याओं का वह समूह एक नगर के समान प्रतीत होता था अथवा समस्त नगर की कन्याओं के लिये वह प्रबन्ध था, इस भाव को प्रकट करने के लिये 'पुर' पद का प्रयोग हुआ है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि राजा अथवा धनी-मानी जन जहाँ अपने महलों या बस्ती में अपनी कन्याओं के लिये सब प्रकार की शिक्षा का प्रबन्ध करते थे, वहाँ साधारण जनता की कन्याओं के लिये भी शिक्षा की समस्त सुविधा प्रदान की जाती थीं और समस्त कन्याएं साथ ही शिक्षा का अभ्यास करती थीं। घर से अथवा बस्ती से बाहर ऋषियों के आश्रम अथवा गुरुकुलों में जाकर कन्याओं के रहने और शिक्षा ग्रहण करने का एवं उनके लिये किसी इस प्रकार की संस्था का उल्लेख रामायण, महाभारत में नहीं आता।

यह सम्भव है कि राजधानियों के अतिरिक्त साधारण जनता की बस्तियों में भी सामूहिक रूप से कन्याओं के लिये शिक्षा का ऐसा प्रबन्ध रहता हो। इन ग्रन्थों में राजघरानों से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं का ही उल्लेख होना सम्भव है। पर राजधानियों में जैसा प्रबन्ध कन्याओं की शिक्षा के लिये होता था उसका अनुकरण साधारण प्रजा में होना कोई आश्चर्य की या अनहोनी बात नहीं है, भले ही उसका उल्लेख इन ग्रन्थों में न हो सका हो। इस सम्बन्ध में यह स्पष्ट है कि जिस प्रकार बालकों के लिये यह आवश्यक था कि वे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए शिक्षा का ग्रहण करें, बालिकाओं के लिये भी इतना आवश्यक प्रतीत होता है कि वे अविवाहित अवस्था में ही शिक्षा ग्रहण करती थीं। विवाह होने पर उनको गृहस्थ के झमेलों में फँसना पड़ता था और उनका अधिकाधिक समय घर के ही आंतरिक प्रबन्ध में व्यतीत हो जाता था ऐसी अवस्था में शिक्षा के लिये समय निकालना कठिन हो सकता था। इसलिये पिता के घर में रहते हुए भी कुमारी अवस्था में उनकी शिक्षा सम्पन्न हो जाती थी। संभवत: ब्रह्मचर्य से सम्बन्ध रखने वाले अन्य कठिन व्रतों का पालन करने के लिये बालकों की तरह उन्हें बाध्य नहीं होना पड़ता था।

आगामी ऋषि मेला
२७, २८, २९ अक्टूबर २०१७, शुक्र, शनि, रविवार
स्थान- ऋषि उद्यान, अजमेर

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष-साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष-ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिखकर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

संस्कृत : एक जीवित भाषा

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा

प्राय: यह समझा जाता है कि संस्कृत एक मृत भाषा है। यूरोप तथा अन्य अनेक देशों के प्राच्यविद्याविद् संस्कृत को मृत ही मानते हैं। यहाँ तक ही नहीं, कुछ लोग तो इससे भी आगे जाकर यह भी कह देते हैं कि यह भाषा सामान्यतया आम आदमी द्वारा कभी प्रयोग में नहीं लायी गयी। यहाँ मैं प्रारम्भ में ही यह कह दूँ कि एक भारतवासी के लिए ऐसा कथन अत्यन्त आश्चर्योत्पादक तथा खेदजनक ही होगा जिसमें यह कहा जाय कि उसकी पवित्र भाषा कभी एक जीवित-जागृत भाषा नहीं थी, आज तो यह जीवित नहीं ही है, किन्तु विगत में भी कभी नहीं रही।

मैं इस निबन्ध में यह सिद्ध करने का प्रयत्न करुँगा कि वह संस्कृत भाषा, जिसे महर्षि पाणिनि ने अपने 'अष्टाध्यायी' नामक ग्रन्थ में सुनिश्चित रूप प्रदान किया है, उनके युग में भी प्रयोग में आनेवाली भाषा थी। द्वितीयत: मैं यह भी बताऊँगा कि भारत के सभी भागों में, कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, विद्वान् पास्परिक वार्तालाप तथा पत्र-व्यवहार में आज भी इस भाषा का बहुतायत से प्रयोग करते हैं। जो लोग यह कहते हैं कि संस्कृत कभी बोली जाने वाली भाषा नहीं रही, उन्हें यह बताना पड़ेगा कि जिस भाषा में प्रचुर मात्रा में साहित्य है, उस संस्कृत को भी संसार की उन प्राचीन तथा अर्वाचीन भाषाओं के उस वर्ग में क्यों न रखा जाय जो कि भिन्न-भिन्न युगों में बोली जाती रही हैं। जब तक उपर्युक्त कथन के विपरीत कोई प्रमाण नहीं मिलता, हमें संस्कृत को भी अन्य प्रायोगिक भाषाओं में ही स्थान देना होगा। लैटिन तथा ग्रीक आज मृत भाषाएँ हैं, किन्तु कोई भी व्यक्ति इस बात में शंका नहीं करता कि वे किसी समय बोली जानेवाली भाषाएँ थीं। इसी तर्क का अनुसरण करते हुए यह समझना कठिन हो जाता है कि संस्कृत को भी सन्देह का लाभ क्यों नहीं दिया जाता और उसे किसी समय सर्वसाधारण के प्रयोग में आने वाली भाषा क्यों नहीं माना जाता?

कुछ लोग कहेंगे कि भारत की पुरानी प्राकृत भाषाओं का परिष्कृत रूप ही संस्कृत है, परन्तु अनेक विद्वानों की धारणा है कि संस्कृत तथा प्राकृत समकालीन हैं तथा उनका परस्पर भगिनीवत् सम्बन्ध है। जैसा कि हम जानते हैं, प्राचीन नाटकों में नायक संस्कृत बोलते हैं, जबकि निम्न श्रेणी के लोग किसी प्रकार की प्राकृत भाषा का प्रयोग करते हैं। कुछ लोगों की यह धारणा है कि संस्कृत का आविष्कार ब्राह्मणों ने इसीलिए किया था कि इस भाषा में निहित सारा ज्ञान उन्हीं के पास रहे। वे यह भी कहते हैं कि भारत का पुरोहितवर्ग सामान्य जनता को प्रवंचित करने के लिए ही संस्कृत का प्रयोग धर्म-कार्यों में करता था। अपने कथन की पुष्टि में वे यह भी कहते हैं कि पुरोहितवर्ग का मुख्य ध्येय तो जनसामान्य को अज्ञान में रखना ही था और उसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए उन्होंने साधारण जनता को संस्कृत पढ़ने से निरुत्साहित किया। यहाँ तक कि किसी विदेशी भाषा को पढ़ने पर तो उन्होंने पूर्ण प्रतिबन्ध ही लगा दिये, जैसा कि संस्कृत के इस प्रसिद्ध श्लोक से ज्ञात होता है-

न वदेद्यावनीं भाषां प्राणाकण्ठगतैरपि।
हस्तिना ताड्यमानेऽपि न गच्छेज्जैनमन्दिरम्।।

अर्थात् प्राणों पर विपत्ति आने पर भी हमें यावनी भाषा नहीं बोलनी चाहिए तथा हाथी के द्वारा पीड़ित होने पर भी जैन मन्दिर में जाकर आश्रय लेना अनुचित है।

कतिपय अन्य लोगों का कथन है कि संस्कृत में व्याकरण-विषयक जो जटिलताएँ हैं, इसके व्याकरण में जैसे अपवाद आदि हैं, इसमें समास आदि के जैसे जटिल नियम हैं तथा सन्धि जैसे अत्यन्त व्यवस्थित किन्तु कृत्रिम नियम हैं जो कि इसकी विकास की गति को अवरुद्ध किये हुए हैं, इन सबको देखते हुए यही जान पड़ता है कि सामान्य लोगों द्वारा शायद ही इसका कभी प्रयोग होता रहा हो।

जो लोग यह मानते हैं कि संस्कृत-भाषा प्राकृतों की एक विकसित अवस्था है तथा प्राकृत एवं संस्कृत एक-दूसरी के निकट होने के कारण भगिनीवत् समकालीन हैं, मेरे विचार से वे गलती पर हैं। ऐसे लोगों ने 'प्राकृत' शब्द की व्युत्पत्ति को ही ठीक प्रकार से नहीं समझा। 'प्राकृत

प्रकाश' के लेखक वररुचि तथा प्रसिद्ध वैयाकरण एवं कोश निर्माता हेमचन्द्र ने बताया है कि 'प्राकृत' शब्द 'प्रकृति' से बना है तथा यह तद्धित है जिसमें अण् प्रत्यय लगा है। अब यह भी जानना चाहिए कि 'प्रकृति' शब्द का अर्थ 'मूल' या 'आदिस्रोत' होता है तथा वररुचि के अनुसार संस्कृत ही वह प्रकृति (मूल) है जिससे अन्य सारी प्राकृत भाषाएँ निकली हैं। उसने अपने ग्रन्थ 'प्राकृतप्रकाश' में पूर्णतया सिद्ध कर दिया है कि प्राकृत भाषाएँ अपनी 'प्रकृति' पर निर्भर होती हैं और उनकी यह प्रकृति निश्चय ही संस्कृत है। मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ कि 'अष्टाध्यायी' में एक भी ऐसा सूत्र नहीं है जिससे यह सिद्ध होता हो कि पाणिनि को अनेक प्राकृतों में से एक का भी परिचय था, परन्तु यह बात पतंजलि के बारे में नहीं कही जा सकती जो पाणिनि के कई शताब्दियों बाद हुए। महाभाष्यकार स्वयं ही बतलाते हैं कि संस्कृत-शब्दों के अनेक अपभ्रंश-रूप भी होते हैं। उदाहरण के रूप में वे कहते हैं कि एक 'गौ' शब्द के ही गवि, गोनी, गोता आदि अपभ्रंश रूप चल पड़े हैं। पतंजलि अत्यन्त तत्परतापूर्वक संस्कृत-व्याकरण का अध्ययन करने के लिए कहते हैं। इसी प्रसंग में वे यह भी बतलाते हैं कि व्याकरण का अध्ययन मनुष्य के लिए क्यों आवश्यक माना गया है। उनका कथन है कि हमें व्याकरण पढ़ना चाहिए अन्यथा हम 'म्लेच्छ' बन जायेंगे क्योंकि जो व्यक्ति संस्कृत-शब्दों का सही उच्चारण नहीं कर सकता उसी की 'म्लेच्छ'-संज्ञा होती है। पतंजलि ने अपने महाभाष्य में जिन 'अपशब्द' तथा 'अपभ्रंश' आदि शब्दों का प्रयोग किया है, वे 'अष्टाध्यायी' में प्रयुक्त नहीं हुए हैं। जो लोग यह मानते हैं कि पाणिनि भी संस्कृत का अपनी मातृभाषा के रूप में प्रयोग नहीं करते थे, उनके समक्ष एक अन्य कठिनाई उपस्थित होगी। जैसा कि हम देख चुके हैं, पाणिनि को किसी प्राकृत भाषा की जानकारी नहीं थी। (अर्थात् पाणिनि-युग में प्राकृत भाषा के होने का पता नहीं चलता), तब यह प्रश्न होता है कि पाणिनि स्वयं कौन-सी भाषा प्रयुक्त करते थे? इस प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर मिलता है कि वे संस्कृत बोलते थे। उन्होंने वैदिक तथा लौकिक दोनों संस्कृत भाषाओं के नियम दिये हैं, परन्तु अष्टाध्यायी में अधिकांश में प्रचलित (बोलचाल की संस्कृत) भाषा के नियम दिये गये हैं जिन्हें वे 'भाषा' कहते हैं। यह ध्यान देने की बात है कि पाणिनि जिस भाषा का व्याकरण लिख रहे हैं, उसके लिए वे 'संस्कृत' शब्द का प्रयोग कहीं नहीं करते। वे इतने विनम्र हैं कि अपनी मातृभाषा के लिए उस संस्कृत शब्द का प्रयोग नहीं करते जिसका अभिप्राय 'पूर्ण' तथा 'परिष्कृत' से लिया जाता है।

'भाषा' शब्द 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है 'बोलना'। हमारी चर्चा के प्रसंग में इस शब्द पर विचार करना आवश्यक है। पाणिनि ने 'भाषा' शब्द का प्रयोग (अ. ३, पाद २, सूत्र १०९) 'छान्दस' नाम की उस प्राचीन भाषा के विलोम-अर्थ में किया है जिसका प्रयोग उनके समय में बन्द हो गया था। 'भाषा' शब्द तो प्रयुक्त ही उस भाषा के लिए होता है जो बोली जाती है, प्रयोग में आती है। इसके लिए प्रमाण ढूँढना भी कठिन नहीं है। वर्तमान काल में भारत में जो हिन्दी आदि आधुनिक भाषाएँ प्रचलित हैं, बोली जाती हैं, उन्हें भी 'भाषा' बोलने के लिए पाणिनि ने जो सामान्य तथा विशेष नियम बनाये हैं, उनका कोई अर्थ नहीं था यदि संस्कृत बोलचाल की भाषा न होती। यही बात उन तद्धित प्रत्ययों के विषय में कही जा सकती है जो उनके ग्रन्थ में बहुतायत से मिलते हैं। किसी कृत्रिम भाषा के व्याकरण में उनके विवेचन का कोई प्रसंग ही नहीं होता।

यह कथन तो सर्वथा प्रमाणरहित ही है कि संस्कृत उन ब्राह्मणों का आविष्कार है जिन्होंने इस भाषा पर अपना एकाधिकार कर रखा था। यह आश्चर्य की बात है कि मेरे भी कुछ देशवासी संस्कृत के बारे में ऐसी ही विचित्र धारणा रखते हैं, परन्तु इस सम्बन्ध में मैं भी दृढ़ता से कह सकता हूँ कि ऐसा कहने वाले अपनी पवित्र भाषा के बारे में कुछ भी नहीं जानते, उनकी शिक्षा पूर्णतया पाश्चात्य पद्धति पर हुई है। हमें भारत के वर्तमानकालीन समाज को ध्यान में रखकर उसके अतीत पर विचार नहीं करना चाहिए। आज तो भारतीय समाज में जाति-प्रथा, मूर्तिपूजा, बाल-विवाह आदि जो अन्धविश्वासपूर्ण रीति-रिवाज चल पड़ें हैं, वे ही आधुनिक भारतीय समाज की रूपरेखा बनाते हैं। आज के लोगों की आदतों, स्वभाव तथा चिन्तन में प्राचीन काल की अपेक्षा इतना अधिक अन्तर आ गया है

कि वर्तमानकालीन भारत को देखकर अतीतकाल के आर्यावर्त्त के बारे में कुछ भी निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। आज तो बहुत कम ब्राह्मण ऐसे मिलेंगे जो वेद के एक मन्त्र का भी उच्चारण कर सकते हों, अथवा किसी निम्न जाति के व्यक्ति को संस्कृत सिखाते हों, परन्तु मेरा पक्का विश्वास है कि इस प्रकार की कट्टरता हमारे शास्त्रों द्वारा अनुमोदित नहीं है। इसके विपरीत वेदों, ब्राह्मणग्रन्थों, उपनिषदों तथा सूत्रों से इस बात के भूरिश: प्रमाण मिलते हैं कि प्राचीन काल में जाति अथवा वर्ग का अन्तर किये बिना संस्कृत सभी लोगों की समान सम्पत्ति थी। भारतवासी संस्कृतभाषी आर्यों के धार्मिक तथा सामाजिक विधान उन सभी लोगों के लिए समान रूप से उपलब्ध थे जो ज्ञानोपार्जन करना चाहते थे। ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है जहाँ निम्न जाति के लोग भी अपने गुणों के बल पर सर्वोच्च पदों पर पहुँचे थे। 'ऐतरेय ब्राह्मण' में हमें यह लिखा मिलता है कि शूद्रा माँ का पुत्र 'कवष ऐलूष' अपनी योग्यता एवं विद्वत्ता के कारण सम्मानित हुआ तथा ऋषियों की कोटि में परिगणित हुआ। उसके जीवन का सर्वाधिक उल्लेखनीय प्रसंग तो यही है कि शूद्र होने पर भी ऋग्वेद के कतिपय मन्त्रों का वह द्रष्टा बना (ऋग्वेद १०-३०-३१)। 'छान्दोग्योपनिषद्' में यह स्पष्ट लिखा है कि सत्यकाम जाबाल का कोई गोत्र नहीं था। उसके माता-पिता आदि के बारे में हमारी जानकारी इतनी ही है कि वह 'जबाला' नामक स्त्री का पुत्र था तथा वह अपनी माता के नाम पर ही प्रसिद्ध हुआ। इस प्रकार अज्ञात व्यक्तियों की सन्तान होने पर भी जबाल 'यजुर्वेद' की एक शाखा का प्रवर्त्तक माना गया है। 'आपस्तम्ब सूत्र' (२-५-१०) तथा 'मनुस्मृति' (१०-६५) में तो यहाँ तक लिखा है कि एक शूद्र अपने शुभ कर्मों से ब्राह्मण अथवा ब्राह्मण अशुभ कर्मों से शूद्र बन जाता है। 'शुक्ल-यजुर्वेद' के २६ वें अध्याय में एक प्रसिद्ध मन्त्र है जिसमें यह कहा गया है कि वेद की पवित्र एवं कल्याणी वाणी का प्रचार तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, यहाँ तक कि निम्न जातियों में से निम्नतम तक को भी करना चाहिए। हमारे शास्त्रों के इन स्पष्ट प्रमाणों के रहते यह नहीं कहा जा सकता कि मात्र ब्राह्मणों के लिए ही वेद बनाये गये हैं।

पाणिनि ने अपनी 'अष्टाध्यायी' (अ. ६, पाद १, सूत्र १३०) में एक प्रसिद्ध वैय्याकरण 'चक्रवर्मन' का उल्लेख किया है। अब यह सिद्ध बात है कि 'चक्र वर्मन' क्षत्रिय था, क्योंकि उसके नाम के पीछे 'वर्मा' शब्द का प्रयोग मिलता है। उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्राह्मणों का ही संस्कृत पर एकाधिकार था, यह कथन तथ्यपूर्ण नहीं है। समस्त आर्यावर्त्त में सभी वर्गों द्वारा इस भाषा का बिना किसी भेदभाव के, निर्बाध प्रयोग किया जाता था।

प्राय: लोग यह कहते हैं कि संस्कृत का व्याकरण इतना जटिल है कि उसके कभी बोली जाने वाली भाषा होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती, परन्तु मेरे विचार से ऐसे लोगों का कथन बहुत युक्तिपूर्ण नहीं है। संस्कृत भाषा में जो बहुत-से अपवाद तथा अनियमित रूप आदि मिलते हैं, वही इस बात के पुष्ट प्रमाण हैं कि यह किसी समय आम आदमियों द्वारा बोली जाती थी। प्राय: यह कहा जाता है कि कुछ अंशों में शब्द सिक्कों की तरह होते हैं तथा जो सिक्के हजारों हाथों में से निकलते हैं उनकी आकृति भी विकृत हो जाती है, उसी प्रकार सबसे अधिक प्रयोग में आनेवाले शब्दों का रूप भी विकृत हो जाता है और उनमें अनेक प्रकार की कई विशिष्टताएँ (विद्रूपताएँ) आ जाती हैं। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि प्राय: सभी प्राचीन तथा अर्वाचीन भाषाओं में अनगढ़ रूपों वाले शब्द मिलते हैं। ये वही शब्द होते हैं, जिनका प्रयोग अधिकाधिक होता है। संस्कृत भी इसी नियम के अन्तर्गत आ जाती है। जहाँ तक सन्धि के नियमों का सम्बन्ध है, अन्य देशवासियों को ये कृत्रिम ही लगते होंगे, किन्तु भारतवासी इन नियमों से इतने अधिक परिचित हैं कि इस तर्क के आधार पर संस्कृत को बोली जाने वाली भाषा के रूप में स्वीकार करने में कोई अड़चन नहीं आती। पाणिनि ने अपने ग्रन्थ में अनेक वैय्याकरणों के नाम दिये हैं तथा भारत के विभिन्न प्रान्तों में प्रचलित उच्चारणों की विभिन्नता का भी संकेत किया है। इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि जिस समय 'अष्टाध्यायी' की रचना हुई थी, उस समय संस्कृत सामान्य बोलचाल की भाषा थी।

अब मैं संक्षेप में यह बताना चाहता हूँ कि हम भारतवासी इस समय संस्कृत के बारे में क्या विचार रखते

हैं। संस्कृत के व्याकरण में बताई जाने वाली तथाकथित कठिनाइयों के होने पर भी मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि भारत का शिक्षित वर्ग आज भी संस्कृत को परस्पर विचार-विनिमय के साधन में रूप में प्रयोग कर सकता है। साथ ही मैं यह भी कह सकता हूँ कि संस्कृत एक प्रकार से जीवित भाषा है। **वस्तुतः संस्कृत भारत के पठित-वर्ग की एक प्रकार से राष्ट्रभाषा ही है। इसमें किसी को कोई सन्देह नहीं है कि यदि संस्कृत का प्रयोग राष्ट्रभाषा के रूप में किया जाता है तो उसमें कोई असुविधा भी नहीं होगी।** मेरे इस कथन का समर्थन वे भारतविद्याविद् करेंगे जो वर्षों तक भारत में रहे हैं। मैं जानता हूँ कि जिस समय प्रो. मोनियर विलियम्स भारत में थे तो वे प्रायः प्रतिदिन पण्डितों से भेंट किया करते थे और उनका यह वार्तालाप संस्कृत में ही होता था। डॉ. बूलर जब बम्बई और पुणे में प्रोफ़ैसर के पद पर रहे तो वे अपने कॉलेज के पण्डितों से प्रायः हर रोज संस्कृत में ही बोलते थे। इसी प्रकार डॉ. कीलहॉर्न तथा अन्य प्राच्यविद्याविद् विद्वान् जो आज भारत में हैं, वे पण्डितों से वार्तालाप करते समय संस्कृत का ही प्रयोग करते हैं। प्राच्य और पाश्चात्य विद्वानों के पारस्परिक विचार-विनिमय में भी संस्कृत को ही माध्यम के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। मैं अपने इस कथन के समर्थन में प्रो. मैक्समूलर के कथन को उद्धृत करना चाहता हूँ, उन्होंने अपने हिबर्ट व्याख्यानों में कहा था- ''जो ब्राह्मण अपनी पवित्र परम्पराओं के पालन में दृढ़ हैं, वे अंग्रेजी अथवा बंगाली का भी प्रयोग नहीं करते, वे संस्कृत ही बोलते हैं और इसी भाषा में लिखते हैं। मुझे प्रायः उनके पत्र मिलते रहते हैं जो सर्वथा निर्दोष संस्कृत में होते हैं।''

राजा सौरीन्द्रमोहन ठाकुर तथा **रामदास सेन** ने इस परिषद् के सम्मुख अपने **जो संस्कृत-गीत पठनार्थ भेजे हैं,** वे भी मेरे इस कथन की पुष्टि ही करते हैं। बहुत कम यूरोपीय लोगों को इस बात का पता है कि हम भारतवासी किस सीमा तक संस्कृत का प्रयोग करते हैं। भारत के विभिन्न भागों में मेरे अनेक मित्र हैं और वे संस्कृत के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में मुझसे पत्र-व्यवहार नहीं कर सकते। कुछ मास पूर्व ही प्रो. मोनियर विलियम्स ने 'एथेनियम' नामक पत्र में स्वामी दयानन्द द्वारा मुझे भेजे गये एक संस्कृत-पत्र का अनुवाद प्रकाशित किया था। स्वामी जी तो किसी समय बच्चों तक से संस्कृत में वार्तालाप करते थे। **यदि भारत के सभी भागों के पण्डित लोग संस्कृत तथा हिन्दी के माध्यम से अपनी बौद्धिक चर्चाओं को सम्पन्न न करें तो उनका पारस्परिक विचार-विनिमय तो असम्भव ही हो जायेगा, क्योंकि इस विशाल देश के विभिन्न प्रान्तों में बोली जाने वाली प्रादेशिक भाषाओं की संख्या बहुत अधिक है। मैं यह बात अपने अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ।** मैंने भारत के पश्चिमी तथा उत्तरी भागों में सामाजिक तथा धार्मिक विषयों पर अनेक व्याख्यान दिये हैं तथा शास्त्रार्थ भी किये हैं, किन्तु संस्कृत में बोलने से मुझे कहीं कोई कठिनाई नहीं हुई और मेरे देशवासियों ने मेरे कथन को भली-भाँति समझा। इस प्रकार मैंने भली-भाँति सिद्ध कर दिया है कि पाणिनि के समय संस्कृत बोलचाल की भाषा थी तथा आज भी यह भारत के शिक्षित नागरिकों द्वारा अधिकांश में बोली तथा लिखी जाती है।

(पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा पंचम अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्यविद्या सम्मेलन के बर्लिन अधिवेशन में पठित निबन्ध का सारांश)

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

।।ओ३म्।।

वेद गोष्ठी २०१७ के लिए निर्धारित विषय

वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त

उपशीर्षक :

1. ऋग्वेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
2. ऋग्वेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
3. ऋग्वेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
4. ऋग्वेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
5. ऋग्वेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
6. ऋग्वेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
7. यजुर्वेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
8. यजुर्वेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
9. यजुर्वेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
10. यजुर्वेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
11. यजुर्वेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
12. यजुर्वेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
13. सामवेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
14. सामवेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
15. सामवेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
16. सामवेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
17. सामवेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
18. सामवेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
19. अथर्ववेद में शिक्षा चिन्तन की मीमांसा
20. अथर्ववेद में शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्त और उनकी विवेचना
21. अथर्ववेद में शिक्षक और शिष्य सम्बन्धों की मीमांसा
22. अथर्ववेद में शिक्षा का पाठ्यक्रम - विश्लेषणात्मक अध्ययन
23. अथर्ववेद में शिक्षण-विधि के विभिन्न आयाम
24. अथर्ववेद के प्रमुख शिक्षाशास्त्री और उनके विचार
25. वेदांग में प्रमुख शिक्षा के सिद्धान्त
26. वैदिक काल में शिक्षा दर्शन
27. उपनिषदों में शिक्षण की विभिन्न शैलियाँ
28. उपनिषदों में आचार्य और शिष्य सम्बन्धों की विवेचना
29. उपनिषदों में अध्ययन का पाठ्यक्रम
30. उपनिषदों के संदर्भ में गुरुकुलों की विवेचना
31. उपनिषदों में शिक्षा का परम उद्देश्य
32. उपनिषदों में शिक्षण-विधि की विवेचना
33. प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन
34. प्राचीन भारत में शिक्षण-विधि और प्रकार
35. प्राचीन भारत में शिक्षा के विभिन्न उपागमों का अध्ययन
36. वैदिक साहित्य में आचार्य की भूमिका
37. मनुस्मृति में शिक्षा के सिद्धान्त
38. षड्दर्शनों में शिक्षण के सिद्धान्त
39. षड्दर्शनों में आचार्य-शिष्य सम्बन्धों का आलोचनात्मक विवेचन
40. न्याय-वैशेषिक दर्शनों में शिक्षा के सिद्धान्त
41. न्याय-वैशेषिक दर्शनों में शिक्षण की प्रमुख विधि
42. सांख्य-योग में शिक्षा दर्शन
43. वैदिक शिक्षा दर्शन में शिक्षण संस्थानों का प्रशासन-आर्थिक परिप्रेक्ष्य में
44. वैदिक शिक्षा दर्शन एवं आधुनिक शिक्षा-शास्त्री विशेषत: महर्षि दयानन्द सरस्वती के संदर्भ में
45. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त और महर्षि दयानन्द
46. वैदिक शिक्षण-विधियाँ उनकी क्रियात्पक पक्ष के संदर्भ में
47. वैदिक शिक्षा सिद्धान्त और आधुनिक भारतीय शिक्षा-शास्त्री
48. प्राचीन भारत में शिक्षा-दर्शन, उसकी प्रक्रिया एवं साधन
49. वैदिक शिक्षा के सिद्धान्त मानव के परम लक्ष्य के संदर्भ में
50. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त-बाल शिक्षा के संदर्भ में
51. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त : महिला शिक्षण के संदर्भ में

52. वैदिक शिक्षा चिन्तन और महिला शिक्षण की प्रक्रियाएँ
53. वैदिक शिक्षा एवं प्राचीन शिक्षा-शास्त्री
54. वैदिक महिला शिक्षा-शास्त्री और उनके सिद्धान्त
55. वैदिक शिक्षण की पद्धतियाँ और आधुनिक शिक्षण की विधियों का तुलनात्मक अध्ययन
56. वैदिक शिक्षा के सिद्धान्त और समकालीन भारतीय शिक्षा-शास्त्री : एक तुलनात्मक विवेचन
57. वैदिक शिक्षा में मनोविज्ञान की विवेचना
58. वैदिक शिक्षा में अधिगम प्रक्रिया और सिद्धान्त
59. वैदिक शिक्षा में अभिप्रेरण के प्रमुख सिद्धान्त
60. वैदिक शिक्षा में व्यक्तित्व एवं उसके मापन की विधियाँ
61. वैदिक शिक्षा में बुद्धि विवेचन एवं बुद्धि विकास के विभिन्न प्रकार
62. वैदिक शिक्षा में व्यक्तित्व का स्वरूप, अर्थ, परिभाषा और व्यवहार के संदर्भ में
63. वैदिक शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा
64. वैदिक शिक्षा में वातावरण का महत्व
65. वैदिक शिक्षा में सृजनात्मकता के सिद्धान्त
66. वैदिक शिक्षा का परम लक्ष्य
67. महर्षि दयानन्द और वैदिक शिक्षा
68. वैदिक शिक्षा में अभिरुचि और मनोविज्ञान के प्रमुख सिद्धान्त
69. वैदिक शिक्षा और भाषा अध्ययन
70. वैदिक शिक्षा और विज्ञान शिक्षण की विधियाँ
71. वैदिक शिक्षा और स्वास्थ्य चिन्तन
72. वैदिक शिक्षा में योग की भूमिका
73. वैदिक शिक्षा में आचार्य चिन्तन की भूमिका
74. स्मृतियों में शैक्षिक विचार - एक अध्ययन
75. वैदिक शिक्षा : वर्तमान अपेक्षायें और चुनौतियाँ
76. वैदिक शिक्षा : नारी सशक्तिकरण के संदर्भ में
77. वैदिक शिक्षा में मूल्यों की उपादेयता - एक समीक्षा
78. वैदिक शिक्षा : शिक्षक और शैक्षणिक तंत्र
79. 21वीं सदी में वैदिक शिक्षा - एक मूल्यांकन
80. विकास की दहलीज पर वैदिक शिक्षा की भूमिका
81. राजधर्म के परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा
82. वैदिक शिक्षा : कृषि के संदर्भ में
83. वैदिक शिक्षा - शहरीकरण के संदर्भ में
84. वैदिक शिक्षा में एकाग्रता बोध
85. वैदिक शिक्षा में शारीरिक शिक्षा
86. वैदिक शिक्षा में अभिभावक की भूमिका
87. वैदिक शिक्षा तथा विद्यालय (गुरुकुल) प्रशासन
88. वैदिक शिक्षा में दीक्षान्त परम्परा के तत्व
89. वेदो में शैक्षिक निहितार्थ की प्रासंगिता
90. वैदिक शिक्षा का मूल्य तत्व - संस्कार शिक्षा - एक मौलिक चिन्तन
91. ब्राह्मण ग्रन्थों में शिक्षा के सिद्धान्त
92. वैदिक शिक्षा और समय की चुनौतियाँ
93. वैदिक शिक्षा और अनुसंधान - एक समीक्षा
94. वैदिक शिक्षा-सिद्धान्त बाल शिक्षा के लिए व्यापक उपागम - एक अध्ययन
95. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त - व्यवसायीकरण शिक्षा के संदर्भ में
96. वेदों में शिक्षा-सिद्धान्त - सामाजिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में
97. वैदिक शिक्षा और अध्ययन के विभिन्न विषय
98. वैदिक शिक्षा और गणित शिक्षण
99. वैदिक शिक्षा और कला के सिद्धान्त
100. वैदिक शिक्षा में कला शिक्षण
101. वैदिक शिक्षा और राज्य की भूमिका
102. वैदिक शिक्षा-शासन के संदर्भ में
103. वैदिक शिक्षा और मानव निर्माण
104. वैदिक शिक्षा में शिक्षक के कर्त्तव्य और दायित्वों की विवेचना
105. वैदिक शिक्षा - बुनियादी शिक्षा के ढाँचे के संदर्भ में
106. वैदिक शिक्षा में जीवन मूल्य
107. वैदिक शिक्षा - भाषा, समाज और संस्कृति के संदर्भ में
108. वैदिक शिक्षा में लिंग समानता
109. वैदिक शिक्षा में नैतिकता
110. वैदिक शिक्षा में मानव मूल्य
111. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त और समान शैक्षिक अवसर
112. वेदों में शिक्षा में गुणवत्ता और विषय-वस्तु
113. वेदों में शिक्षा सिद्धान्त और पाठ्यक्रम की गतिपरकता
114. वैदिक शिक्षा में पर्यावरण-उपागम - एक विवेचन
115. वेदों में शिक्षक-शिक्षा के मूल तत्त्व
116. वेदों में शिक्षा सिद्धान्त - इक्कीसवीं शताब्दी के लिए

आर्यसमाज के एक निर्माता
पूज्य मास्टर आत्माराम अमृतसरी जी

राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

श्रद्धेय मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी की तथा इस लेखक के सार्वजनिक जीवन की आरम्भिक कर्मभूमि एक ही है। वह मूलत: राजस्थानी परिवार से थे, परन्तु उनका जन्म सन् १८६७ में अमृतसर में हुआ था। काशी शास्त्रार्थ से केवल दो वर्ष पूर्व आपका जन्म हुआ। आरम्भिक काल में वह अपने नाम के साथ महेश्वरी शब्द का प्रयोग किया करते थे। मुनिवर गुरुदत्त की प्रेरणा से जाति बन्धन छूट गया, टूट गया। उनके पिता बहुत प्रतिष्ठित सज्जन पुरुष थे।

विद्यार्थी जीवन में एक अंग्रेज की इतिहास पर लिखी पुस्तक पढ़ाई जाती थी। उसमें महमूद के आक्रमणों के वर्णन में सोमनाथ आदि मन्दिरों की लूट व मूर्तियों के तोड़े जाने की कहानियाँ पढ़कर वह लज्जित होते थे। मूर्तिपूजा से एकदम घृणा हो गई। श्री पं. लेखराम जी अमृतसर आये तो पूज्य मास्टर मुरलीधर जी की प्रेरणा से आप उनका व्याख्यान सुनने चले गये। पण्डित जी ने सप्रमाण बताया कि मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध है। इससे आत्माराम जी का स्वाभिमान जागा। आप आर्य बन गये। पण्डित जी ने तब वहाँ एक वादविवाद सभा स्थापित कर दी। वही उसके प्रधान बनाये गये। आत्माराम जी संस्थापक मन्त्री रहे। यह debating club अमृतसर में कोई ८५-९० वर्ष तक चलती रही। इस लेखक ने भी कई बार इसके कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लिया।

मास्टर जी आर्यप्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री व मन्त्री चुने गये। सभा के पास धन तो था नहीं, परन्तु सभा की साख थी। बहुत धूम थी। एक दो चार आने की कापी पर सभा का सारा लेखा-जोखा श्री मास्टरजी के घर पर रहता था। जब पंजाब में ला. मूलराज तथा कर्नल प्रतापसिंह के षड़यन्त्र से आर्य समाज में मांसाहार का प्रश्न पैदा हुआ तब मास्टर जी ने शाकाहार के मण्डन में अपनी लेखनी चलाकर धूम मचा दी।

आप अंग्रेजी, हिन्दी, फारसी, अरबी आदि भाषाओं के अच्छे विद्वान् और हिन्दी उर्दू के सिद्धहस्त लेखक थे। आप जाने-माने अनुवादक थे। सत्यार्थप्रकाश के पहले उर्दू अनुवाद के सात समुल्लासों का आपने ही अनुवाद किया था। सत्यार्थप्रकाश के पंजाब अनुवाद के भी एक सह अनुवादक आप थे।

आपने महात्मा मुंशीराम जी के साथ मिलकर जाति-पांति के विरुद्ध भारी आन्दोलन चलाया। आप एक उत्तम वक्ता और बहुत सफल शास्त्रार्थ महारथी थे। नगीना के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ में सैंकड़ों मौलवियों की उपस्थिति में मौलवी सनाउल्ला से अकेले मास्टर आत्माराम ने वैदिक धर्म के प्रतिनिधि के रूप में आर्यसमाज का पक्ष रखा। सहस्रों मुसलमानों ने आपको सुना। आप की कीर्ति को चार चाँद लग गये।

बड़ौदा के महाराज ने पूज्य नित्यानन्द जी की प्रेरणा से अस्पृश्यता उन्मूलन व दलितों में शिक्षा प्रसार के लिये आपकी सेवायें प्राप्त कीं। आप स्कूलों के निरीक्षक बनकर बड़ौदा पहुँच गये। फिर गुजरात के ही हो गये। गुजरात में दलितोद्धार का श्रेय आपको तथा डॉ. चिरञ्जीव भारद्वाज को प्राप्त है। डॉ. भीमराव आपकी ही देन थे। आपने वहाँ कुमार सभा तथा कन्या गुरुकुल स्थापित कर बड़ा यश पाया।

दलितोद्धार तथा अन्धविश्वास मिटाने के लिये आपने बड़े कष्ट झेले। आपका स्वाध्याय बड़ा विस्तृत था। पं. लेखराम जी लिखित ऋषि जीवन के सम्पादक आप ही थे। रामविलास जी सारडा के साथ मिलकर भी आपने ऋषि जीवन लिखा। गुजरात के प्रथम मेधावी वैदिक विद्वान् पं. ज्ञानेन्द्र जी आप ही की देन थे। सन् १९३८ में आपका निधन न होता तो आप हैदाराबाद सत्याग्रह के एक सर्वाधिकारी बनकर जेल जाते। **(चित्र आवरण पृष्ठ ४४ पर देखें)**

साहित्य समीक्षा

भाष्यकार मनुस्मृति- पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

प्रकाशक- विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

मूल्य- ३००=००

मनुस्मृति के इस भाष्य की विशेषता बताने की आवश्यकता नहीं। भाष्यकार का नाम ही इसकी उत्तमता का सबल प्रमाण है। महर्षि दयानन्द जी को इस बात का श्रेय जाता है कि आपने इस प्राचीन स्मृति की महत्ता तो संसार को बताई ही, परन्तु साथ ही समय-समय पर इसमें किये गये प्रक्षेपों की ओर देश-विदेश के विद्वानों का ध्यान खींचा। कार्य की अधिकता व समय अभाव के कारण महर्षि इसके प्रक्षिप्त श्लोकों को निकालने का कार्य न कर सके।

धर्मवीर पं. लेखराम जी पहले ऐसे विद्वान् थे जिन्होंने पचासों टीकायें एकत्र करके यह कार्य सिरे चढ़ाने की ठानी, परन्तु उनका बलिदान हो जाने से यह कार्य न हो सका। फिर स्वामी दर्शनानन्द जी ने इस पर थोड़ा कार्य किया, परन्तु वह आटे में नमक के सदृश था। मनुस्मृति पर किये जाने वाले आक्षेपों का समाधान करने में यह संस्करण उपयोगी सिद्ध न हुआ। श्री पं. तुलसीराम जी की मनुस्मृति भी विद्वानों की पूरा सन्तुष्ट न कर सकी।

इस दिशा में पहला स्मरणीय और करणीय तथा प्रशंसनीय कार्य श्रद्धेय पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने किया। इसमें भले ही कुछ विद्वानों को कुछ अधूरापन अथवा कमी लगे, परन्तु गम्भीर विद्वान् उपाध्याय जी के अथक परिश्रम, ऊहा व मौलिकता को विरोधी भी नमन करते हैं। आर्यसमाज के मूर्धन्य नेताओं तथा विद्वानों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की, यथा-श्री महात्मा नारायण स्वामी जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी तथा पं. धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड उपाध्याय जी के परम पुरुषार्थ के प्रशंसक थे। डॉ. अम्बेडकर पौराणिकों की सोच के कारण मनुस्मृति के घोर विरोधी थे। आपने भी इस भाष्य को पढ़ा और इस कारण आर्य सामाजिक दृष्टिकोण के अविरोधी थे।

इस भाष्य में स्वामी सत्यप्रकाश जी का बड़ा सहयोग प्राप्त रहा। स्वयं भाष्यकार के मुख से हमने उनके सहयोग की प्रशंसा सुनी थी। इसमें दोष खोजना कोई बुद्धिमत्ता नहीं। यह पहला पग था। पहला पग तो पहला पग ही होता है। साहसी विद्वान् ने मार्ग तैयार कर दिया। अगली पीढ़ी के विद्वान् उस पर पक्की सड़क बनाने में स्वतन्त्र हैं। उपाध्याय जी ने दिशा न दिखाई होती तो मनुस्मृति की आड़ में ऊँच-नीच फैलाने वाले जन्माभिमानी वर्ग का मुख बन्द न होता। डॉ. सुरेन्द्र जी का अथक प्रयास, उनका भाष्य उपाध्याय जी के उद्देश्य की पूर्ति ही तो है। आर्यसमाज के ये दोनों विद्वान् इतिहास में इस कारण से सदा अमर रहेंगे। अच्छा होता प्रकाशक इसके साथ श्लोकों की निर्देशिका दे देते। प्रकाशक तथा आर्य जनता को इसके प्रकाशन पर हमारी हार्दिक बधाई स्वीकार हो। प्रकाशक तथा आर्य जनता को इसके प्रकाशन पर हमारी हार्दिक बधाई स्वीकार हो।

- राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

जब तक मनुष्य सुख-दु:ख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इससे मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजु.,भा ५.४०

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन-चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्तप्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहा है, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्यजन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से विश्व पुस्तक मेला दिल्ली में वर्ष २०१४ से लगातार इन ग्रन्थों का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। **२.** आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों को पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। **३.** दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय-परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? - यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है। **४.** पाखण्ड, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। **५.** सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। **६.** सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा-१. सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी में)** आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में होगा। लागत मूल्य १००/- रुपये प्रति पुस्तक। **२. ऋषि जीवन चरित्र (हिन्दी में)** लगभग १६४ पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में। लागत मूल्य ६०/- रुपये प्रति पुस्तक। **३. महर्षि द्वारा रचित पुस्तक आर्याभिविनय (हिन्दी में)** ६४ पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में, लागत मूल्य ३०/- रु. प्रति पुस्तक।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य, शिक्षित, विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता, सम्पर्क आदि हो, जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा तथा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**
१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

शङ्का समाधान – ५

डॉ. वेदपाल, मेरठ

शङ्का– १. **पुस्तक**– वैदिक विनय, **लेखक**– आचार्य अभयदेव जी विद्यालंकार, **पृष्ठ**– ३७९, २३. माघ 'तेरी ही शरण' –ऋग्वेद–८/२४/१२

विनय– हे नचाने वाले! हे इन सब चराचर सृष्टियों को कठपुतलियों की तरह हिलाने वाले! मैं तुम्हारी शरण पड़ा हूँ। जब से मैंने अनुभव किया है कि इस गतिमय समस्त ब्रह्माण्ड को गति देने वाले तुम हो, इस संसार में होने वाले छोटे से छोटे और बड़े से बड़े कर्मों को प्ररित करने वाले तुम हो, तुम्हारी इच्छा के बिना इस संसार में घास का एक तिनका भी नहीं हिल सकता और तुम्हारी इच्छा होने पर एक पल में इस पृथिवी पर प्रलय आ सकता है।..........

इस मन्त्र का लेखक ने जो भावार्थ किया है वह पौराणिक जगत् में प्रचलित एक श्लोक से मिलता–जुलता है। श्लोक– तेरी शक्ति के बिना, हे प्रभू मंगल मूल। पत्ता तक हिलता नहीं, तो खिले न कोई फूल। इस मन्त्र का भावार्थ व यह श्लोक मुझे वैदिक मान्यताओं के अनुरूप नहीं लगता। इससे निम्न शंकाएँ उत्पन्न होती हैं–

२. यदि ईश्वर इस चराचर जगत् को कठपुतली की तरह नचाता है, तो जीव कर्म करने में स्वतन्त्र कैसे होगा?

३. यदि इस संसार में सभी छोटे–बड़े कर्म ईश्वर की प्रेरणा से होते हैं, तो क्या चोरी–जारी, भ्रष्टाचार, दुराचार, बेईमानी, अत्याचार आदि सभी ईश्वर की प्रेरणा से होते हैं?

४. क्या घास का तिनका (पत्ता) आदि को हिलाने का कार्य परमात्मा का है, क्या ये परमात्मा की इच्छा है? यदि है तो इसका प्रयोजन क्या है?

५. क्या परमात्मा इस पृथिवी को एक पल में नष्ट करने की इच्छा करेगा? वेद के अनुसार इस सृष्टि को बनने व नष्ट होने में समान समय लगता है, तो यह पृथिवी एक पल में समय से पहले नष्ट कैसे हो जायेगी? क्या परमात्मा अपने ही बनाये नियमों को तोड़ेगा?

सत्यवान आर्य, जेवली, चरखी दादरी (हरियाणा)

समाधान– शङ्काकर्त्ता की शङ्का का आधार आचार्य अभयदेव लिखित ''वैदिक विनय'' की एक विनय ''तेरी ही शरण'' पृष्ठ ३७१ (स्वामी जगदीश्वरानन्द सम्पादित संस्करण) है। शङ्काकर्त्ता ने अपनी शङ्का को चार शङ्काओं में विभक्त कर दिया है। **'वैदिक विनय' विद्वान् लेखक की अपनी शैली में की गई व्याख्या है।** व्याख्या पर कोई टिप्पणी न करते हुए यहाँ केवल प्रस्तुत शङ्का के समाधान का प्रयास है–

१. कठपुतली के नाच पर विचार करें तो स्पष्ट होगा कि नचाने वाला चेतन तथा नाचने वाली कठपुतली जड़ है। वह स्वयं नहीं नाच सकती। स्वेच्छा से अङ्ग–संचालन करना तथा उनके माध्यम से किसी भी प्रकार की भावाभिव्यक्ति करना भी कठपुतली के लिए असम्भव है। सूत्रधार–नचाने वाला जिस प्रकार नचाता है अर्थात् जिस ओर डोरी को हिलाता है वह उसी के अनुसार हिलती है, जिसे उसका नाचना कहा जाता है। यदि वह न नचावे तो कठपुतली में कोई चेष्टा–गति नहीं होगी। किन्तु जीव अचर–जड़ नहीं है, अपितु चेतन है। प्रयत्न जीव का गुण है–

(''**इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम्**''

– न्याय द. १.१.१० तथा–

''**प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रियान्तरविकाराः सुखदुःखेच्छाद्वेषप्रयत्नाश्चात्मनो लिङ्गानि**''

– वैशेषिक द. ३.२.४)

प्रयत्न के जीव का स्वाभाविक गुण होने के कारण यह समवाय रूप में उससे सम्बद्ध है। जबकि कठपुतली के अचेतन होने के कारण यह प्रयत्न उसका गुण नहीं है। उसके द्वारा प्रतीयमान कोई भी प्रयत्न उसका स्वाभाविक गुण न होकर किसी अन्य चेतन द्वारा प्रदत्त ही होगा।

जीव कर्त्ता, भोक्ता (तथा ज्ञाता भी) है। वह कर्म करने में पूर्णतः स्वतन्त्र है। इच्छा–द्वेष ये दो गुण उसके कर्म–स्वातन्त्र्य को सिद्ध करते हैं, क्योंकि जीव सुख की कामना करता है तथा दुःख से दूर रहना चाहता है। जहाँ से सुख की उपलब्धि होती है उसकी इच्छा करता है, जिससे दुःख हो उससे द्वेष करता है। अर्थात् वह किसी पदार्थ की ओर अभिमुख होता है तो किसी से पराङ्मुख। इस प्रकार के कार्य वह स्वेच्छा से करता है। निम्न ऋग्वेद मन्त्र विशेषेण द्रष्टव्य है–

अपाङ् प्राङेति स्वधया गृभीतोऽमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः।

– ऋ. १.१६४.३८

यदि जीव स्वतन्त्र न होता तो उसकी स्थिति चुम्बक से आकृष्ट लौहवत् होती। जिस प्रकार प्रत्येक लौह पदार्थ चुम्बक की ओर खिंचता है। इस खिंचने में उसकी इच्छा का प्रश्न नहीं है। जबकि किसी कर्म के करने और न करने में जीव का

स्वातन्त्र्य ही हेतु है।

'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ्समाः'

– यजु. ४०.२

'अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्नः' –ऋ. १.१६४.१

आदि अनेक मन्त्र जीव के कर्तृत्व तथा भोक्तृत्व के प्रतिपादक हैं।

मन्त्र में पद 'नृतो' (लेखक द्वारा पदार्थ में प्रयुक्त 'नृतः') है। इसका पदार्थ–'हे नाचने वाले!' तथा विनय में –'हे नचाने वाले!' किया गया है। यह अर्थ भाव साम्य के आधार पर किया गया प्रतीत होता है, क्योंकि 'नृती गात्रविक्षेपे' (दिवादि पर.) धातु है। इसका अर्थ है–गात्र विक्षेप–शरीर के अंगों को विशिष्ट प्रकार से चलाना, इधर–उधर हिलाना, हाव–भाव दिखाना, अभिनय आदि।

यदि 'नृतो' पद को सम्बोधन का रूप मानें, तब यह 'नृतिशध्योः कूः' उणादि १.९१ से यह 'कू' प्रत्ययान्त होकर नृतूः–नृत्यतीति नृतूः नर्तकः, सम्बोधन में 'नृतो' होगा। जीव को कर्मरत रहने (कर्म करते समय अंग संचालन–गात्र विक्षेप ही तो है।) की प्रेरणा प्रदान करने से नचाने, हिलाने वाला कहना सम्भव है। किन्तु इस स्थिति में भी जीव कठपुतली नहीं होगा।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि ईश्वर जड़ पदार्थों–पृथिवी, सूर्य, चन्द्र आदि को तो अपनी व्यवस्था से गति प्रदान करता है, किन्तु इससे जीव का कर्म स्वातन्त्र्य बाधित नहीं होता है।

२. वेद के अनेक मन्त्रों में ईश्वर को सविता कहा गया है। अनेकत्र सविता–प्रेरक अर्थ में उपलब्ध है। ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के महर्षि दयानन्दकृत भाष्य में इसे देखा जा सकता है। ईश्वर प्रेरक तो है, किन्तु असत्–अनुचित कर्म से दूर रहने तथा सत् कर्मों में प्रवृत्ति का प्रेरक है। जैसे–''**अक्षैर्मा दीव्यः**'' द्यूत आदि से दूर रहने, ''**कृषिमित् कृषस्व**'' कृषि आदि श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्ति का प्रेरक है। इसी प्रकार–

''**द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं मा हिँ्सीः**''–यजु. ५.४३

''**मा व स्तेनऽईशत माघशंसः**'' –यजु. १.१

''**यद् ग्रामे यदरण्ये यत् सभायां यदिन्द्रिये यदेनश्चकृमा वयमिदं तदवयजामहे स्वाहा**'' – यजु. ३.४५

''**महिर्भूर्मा पृदाकुः**''–यजु.६.१२,

''**अग्ने नय सुपथा.......।युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः**''

– ऋ. १.१८९.१

आदि अनेक मन्त्रों से ईश्वर का सत् कर्मों के प्रति प्रेरकत्व सुस्पष्ट है। चोरी–जारी आदि कर्मों का पाया जाना ईश्वरीय प्रेरणा की उपेक्षा कर जीव की कर्मों में स्वतन्त्र प्रवृत्ति का ही प्रमाण है।

मात्र प्रेरक–प्रेरणा का अभिप्राय दुष्कर्मों की प्रेरणा ग्रहण करना अनौचित्यपूर्ण है।

३. घास के तिनके आदि को हिलाने की न तो परमात्मा की इच्छा और न ही उसका कार्य है। साधारण व्यक्ति भी जानता है कि इनको हिलाना आदि कार्य वायु का है। वैशेषिक का निम्नसूत्र द्रष्टव्य है–

''**तृणे कर्म वायुसंयोगात्**''–५.१.१४,

इसी सन्दर्भ में भाष्य द्रष्टव्य है–

''**.......विषयस्तूपलभ्यमानस्पर्शाधिष्ठानभूतः। स्पर्शशब्दधृतिकम्पलिङ्गस्तिर्यग्गमनस्वभावो मेधादिप्रेरणधारणादिसमर्थः**'' **द्रव्ये वायुप्रकरणम्।**

इसी विषय में कन्दली भी द्रष्टव्य है– ''**तथा वृक्षादीनां कम्पविशेषः स्पर्शवद् द्रव्यसंयोगजो विशिष्टकम्पत्वाद् नदीपूराहतवेतसादिवनकम्पवत्**''।

इस सन्दर्भ के अधिक स्पष्टीकरण के लिए वैशेषिक दर्शन के अध्याय पांच का अध्ययन अपेक्षित है।

४. ईश्वर विषयक इच्छा के सन्दर्भ में प्रथम महर्षि दयानन्द का अभिमत द्रष्टव्य है–

प्रश्न–ईश्वर में इच्छा है वा नहीं?

उत्तर–वैसी इच्छा नहीं। क्योंकि इच्छा भी अप्राप्त, उत्तम और जिसकी प्राप्ति से सुखविशेष होवे उसकी होती है, तो ईश्वर में इच्छा कैसे हो सके, न उससे कोई अप्राप्त पदार्थ, न कोई उससे उत्तम और पूर्ण सुखयुक्त होने से सुख की अभिलाषा भी नहीं है, इसलिए **ईश्वर में इच्छा का तो सम्भव नहीं, किन्तु ईक्षण अर्थात् सब प्रकार की विद्या का दर्शन और सब सृष्टि का करना कहाता है वह ईक्षण है।**

–सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास–७

ईश्वर अन्य जीवों जैसी इच्छा आदि से रहित है। लेखक का अभिप्राय ईक्षण–संकल्प प्रतीत होता है। 'एक पल में प्रलय आने' का अभिप्राय प्रलय प्रक्रिया का पूर्ण होना नहीं है, अपितु प्रलय प्रारम्भ होने के क्षण का द्योतक प्रतीत होता है।

'अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि.' – ऋ. १.२४.१०

ईश्वरीय नियम अटल हैं। स्वयं ईश्वर के द्वारा उन्हें तोड़ने का प्रसंग ही नहीं है।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१ ३ ४ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक २७, २८, २९ अक्टूबर २०१७, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है, जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३४वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २९ अक्टूबर को प्रात: १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा **श्री सत्यानन्द वेदवागीश** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान अजमेर की यज्ञशाला में सम्पन्न होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। २७, २८, २९ अक्टूबर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २७ अक्टूबर को परीक्षा एवं २८ अक्टूबर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१७ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तद्नुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३४वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु-अबोहर,आचार्य विजयपाल-झज्जर, श्री सोमपाल शास्त्री- भूतपूर्व केन्द्रीय कृषि मन्त्री, स्वामी ऋतस्पति-होशंगाबाद, डॉ. ब्रह्ममुनि-महाराष्ट्र, डॉ. वेदपाल-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी- शिवगंज, डॉ. विक्रम कुमार 'विवेकी'-चण्डीगढ़, डॉ. रमेशचन्द्र 'जीवन'- चण्डीगढ़, डॉ. वीरेन्द्र अलंकार-चण्डीगढ़, डॉ. ज्ञानप्रकाश-काँगड़ी, डॉ. रूपकिशोर-काँगड़ी, डॉ. सोमदेव 'शतांशु'-काँगड़ी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार-कुरुक्षेत्र, डॉ. कृ ष्णपाल सिंह-जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री ठा. विक्रमसिंह-दिल्ली, डॉ. उदयन- तेलंगाना, श्री प्रकाश आर्य-महू, श्री सत्यपाल पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	**डॉ. सुरेन्द्र कुमार**	**ओम मुनि**
संरक्षक	**कार्यकारी प्रधान**	**मन्त्री**

वैदिक सोम का स्वरूप

प्रो. सोमदेव 'शतांशु'

वैदिक साहित्य समस्त ज्ञान-विज्ञान का आदिम स्रोत है। वेदों में सोम का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इसके अध्ययन से विदित होता है कि सोम मात्र किसी लता विशेष या पदार्थ विशेष का नाम नहीं है, अपितु यह एक बहुरूप ब्रह्माण्डव्यापी तत्त्व है। परमात्मा, आदित्य-चन्द्रमा-वायु-जल आदि प्राकृतिक तत्त्व, औषधि, वनस्पति, दूध, घृत, मधु आदि भौतिक पदार्थ, वीर्य, औषधि, शारीरिक तत्त्व, ब्रह्म तथा ब्रह्मानन्दानुभूति है। इसके साथ ही विश्व के सभी पदार्थों को सोम कहे जाने का रहस्य यही है कि जहाँ भी सौम्य तत्त्व या सौम्य गुण विद्यमान हैं, उन-उन पदार्थों को सोम नाम से अभिहित किया गया है।

वेद एवं लोक में गुण या धर्म की विभिन्नता के कारण एक ही संज्ञी की अनेक संज्ञाएँ दृष्टिगोचर होती हैं। अपरतः यदि हमें एक ही संज्ञा के अनेक संज्ञी दिखाई दें तो वहाँ उसके गुण वैशिष्ट्य की व्यापकता ही विभिन्न वस्तुओं को एक संज्ञा से सम्बोधन करने में कारण हो सकता है। वैदिक साहित्य में सोम का जो विविध रूप दिखाई देता है, वह आयतनों के भेद के कारण ही है।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार यह समस्त ब्रह्माण्ड दो ही तत्त्वों-अग्नि तथा सोम से निर्मित है। ब्रह्माण्ड में जितने भी मूर्त पदार्थ हैं, वे सब आग्नेय हैं और जितने भी आर्द्र तत्त्व हैं, वे सब सौम्य हैं। ब्रह्माण्ड की इस अग्निसोमात्मकता में ही सोम के वास्तविक स्वरूप का रहस्य अन्तर्निहित है। वस्तुतः समस्त भुवनमण्डल में दो ही सूक्ष्म तत्त्व अनुस्यूत हैं। सर्वत्र सोम की इस अनुस्यूतता के कारण ही इसे महान् एवं समस्त स्थावर-जंगम का पति अर्थात् पालक कहा गया है। समस्त भुवन का आप्यायन कारक होने से ही यह भुवन का पति है। जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों से समस्त भुवनों को परिपूर्ण कर देता है, उसी प्रकार सोम अपने रस से सम्पूर्ण द्यावापृथ्वी को पूर्ण कर देता है।

यह सोम औषधि के रूप में जल में अन्तर्निहित है, यह द्युलोक का एक अमृतमय पेय है, द्युलोक से यह विभिन्न रूपों में पृथ्वी पर आकर औषधि, वनस्पतियों में प्रविष्ट होता है। यह सोम ऋषित्व अवबोधक, स्वर्ज्योतिप्रदाता, सहस्र मार्गवाला, क्रान्तदर्शियों के मार्ग को प्राप्त हुआ तृतीय लोक का प्रतीक होता है। यह सोम द्युलोकस्थ समुद्र की जलीय तरंगों में स्थित होकर द्युलोक के मध्यम भाग को विरेचित करता है। प्रथमा द्यौ उदन्वती द्यौ है, यह जलीय समुद्र है। इसमें स्थित होकर सोम जलतरंगों को प्रेरित करता है। इससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि जो वृष्टि का प्रेरक तत्त्व है, वह सोम है।

यह सोम महान् वात के समान पर्जन्य वृष्टि और ज्वाला के संचार के समान व्याप्त होता है। विचित्र प्रकार से गति करता हुआ यह द्यावा-पृथिवी में व्याप्त हो जाता है। विभिन्न लोकों में गति करता हुआ अमरणधर्मा यह सोम कभी श्रान्त नहीं होता है।इस सोम से द्युलोक, पृथिवी तथा अधः स्थित सभी पदार्थ व्याप्त हैं।

सोम के भुवनपति, द्यावापृथिवी को अपने रस से पूर्ण करने वाला, द्युलोक का अमृतमय पेय, औषधियों एवं वनस्पतियों का पोषक, वृष्टिप्रेरक, द्यावा-पृथिवी को व्याप्त करने वाला इत्यादि विशेषणों से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि सोम एक ऐसा तत्त्व है, जो समस्त भुवन को सक्रिय एवं आप्यायित कर रहा है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि यह द्युलोक का कोई सूक्ष्मतत्त्व है, जो 'द्यु' एवं पृथ्वीलोक में व्याप्त होने वाला है। सोम के इस व्यापक स्वरूप पर इस लेख में विस्तार से विवेचन सम्भव नहीं है। यहाँ आगे पृथिवीस्थानीय सोम के विषय में विवेचन प्रस्तुत है-

पृथिवीस्थानीय सोम के विविध रूप-

ऋग्, यजुः, साम एवं अथर्ववेद संहिताओं, शतपथ, ऐतरेय, गोपथ, जैमिनीय, सामविधान एवं ताण्ड्य ब्राह्मणों के अध्ययन से विदित होता है कि सोम किसी एक पदार्थ का नाम नहीं है अपितु तत्त्व विशेष की संज्ञा है। अग्निषोमात्मकं जगत् यह श्रुतिवाक्य यद्यपि सभी पदार्थों में सोम की विद्यमानता को बताता है तथापि जिन पदार्थों में सोम तत्त्व विशेष रूप से विद्यमान है, उनका वैदिक संहिताओं एवं शतपथादि ब्राह्मणग्रन्थों में विशेषरूपेण वर्णन

प्राप्त होता है।

सोम के विभिन्न रूपों के विषय में यजुर्वेद का निम्न मन्त्र पर्याप्त प्रकाश डालता है-

धानाः करम्भः सक्तवः परीवापः पयोदधि।
सोमस्य रूपं हविष आमिक्षा वाजिनं मधूः।।

-यजुर्वेद १९/२१

धाना, उदमन्थ, सक्तू , हविष्पंक्ति, दूध, दधि, मधु, सोम के ही रूप हैं। वैदिक संहिताओं तथा शतपथ, ऐतरेय, कौषीतकी आदि ब्राह्मण ग्रन्थों में पार्थिव सोम के विभिन्न रूपों का उल्लेख मिलता है तद्यथा-सोमलता, अन्न, औषधि, वनस्पति, जल, दूध, दधि, घृत, मधु, वीर्य, श्री, पुरुष, राजा, प्राण, ज्योति, राज्य, वायु एवं पशु को सोम कहा गया है। सम्प्रति इन पर क्रमशः विचार किया जा रहा है-

१-**सोमलता**- (वनस्पति विशेष) इसका वर्णन आगे प्रस्तुत किया जाएगा।

२-**अन्न-सोम**- मा. शतपथ ब्राह्मण में अन्न को भी सोम कहा गया है। इसे देवताओं का अन्न भी कहा गया है। अग्नि अन्नाद है और सोम अन्न है। सर्वत्र अन्नाद अग्नि में अन्न सोम की आहुति पड़ रही है, जिससे ब्रह्माण्ड गतिमान है। सोम को अन्न कहने का यही तात्पर्य है।

३-**औषधि सोम**-औषधि को सोम कहने का तात्पर्य यह है कि सभी औषधियों में सौम्य गुण विद्यमान है, अतः शतपथ ब्राह्मण में **सोम्या औषधयः**-सभी औषधियां सोमगुण-युक्त कही गयीं हैं। औषधियों के सोम्यगुण युक्त होने के कारण उनको सोम राजा की प्रजा कहा गया है। यही कारण है कि औषधियों को सोम कहा जाता है।

४-**जल सोम**- शतपथ ब्राह्मण में आपः जल को सोम नाम से अभिहित किया गया है। सोम का जल से स्रवित होना तथा **सोमस्य दात्रमसि** जल को सोम का देने वाला कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में जो आर्द्रतत्त्व है, उसे सौम्य कहा गया है। उपर्युक्त विवरणों से इस बात की प्रतीति होती है कि जल में सोम की विद्यमानता है, अतः जल को सोम कहा जाना उचित ही है।

दूध, दधि, घृत, मधु, सोम- यजुर्वेद संहिता, शतपथ तथा कौषीतकी ब्राह्मण में दूध, दधि, घृत, मधु एवं सोम को सोम कहा गया है। काठकसंहिता में भी दूध ही सोम है- **पय एव सोम** ऐसा कहा गया है।

मैत्रायणी संहिता भी दूध को सौम्य प्रतिपादित करती है। स्वामी दयानन्द तथा तदनुवर्ती भाष्यकार जयदेव ने अपने यजुर्वेद भाष्य में सोम का अर्थ दूध किया है। किन्हीं विद्वानों के मत में पय, दधि, घृत, मधु आदि को जो सोम कहा गया है, यह अर्थवाद मात्र है।

सोमलता- वैदिक संहिताओं, निरुक्त एवं शतपथ ब्राह्मण में सोम के लिए अंशु, अन्धस्, अमृत, इन्दु, पवमान, मधु, अन्नम्, सुत, पीयूष, उत्स, द्रप्स, पयस्, रस, रस्य, एवं पितु शब्दों का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। राजनिघण्टु में सोमलता के सोमवल्ली, महागुल्मा, यज्ञश्रेष्ठा, धनुर्लता, सोमार्हा गुल्मवल्ली, यज्ञवल्ली, द्विजप्रिया, सोमक्षीरा, सोम, यज्ञाङ्ग ये नाम उल्लिखित हैं।

सुश्रुत संहिता में सोम के उत्पत्ति स्थान, नाम, आकृति एवं शक्तिवैशिष्ट्य के भेद से अधोलिखित चौबीस भेद माने गए हैं, तद्यथा-

अंशुमान्, मुञ्जवान्, चन्द्रमा, रजतप्रभ, दूर्वासोम, कनीयान्, श्वेताक्ष, कनकप्रभ, प्रदानवान्, तालवृन्त, करवीर, स्वयम्प्रभ, महासोम, गरुडाहृत, गायत्र, त्रैष्टुभ, पांक्त, जागत, शाक्वर, अग्निष्टोम, रैवत, यथोक्त त्रिपदायुक्त गायत्र एवं उडुपति।

वैदिक संहिताओं में सोमलता के रंग, आकृति, उत्पत्तिस्थान, स्वाद एवं गुणों का उल्लेख प्राप्त होता है। तदनुसार सोम का वर्ण हरा, भूरा, लाल, शुभ्र, हिरण्यवर्ण या रुक्मवर्ण तथा प्रकाशमान होता है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में यह भी कहा गया है कि यह सोम दिन में हरे रंग का तथा रात्रि में स्वर्णिम दिखाई पड़ता है।

वैदिक साहित्य के परिप्रेक्ष्य में सोमलता की आकृति के सम्बन्ध में यह वर्णन प्राप्त होता है कि यह औषधि अनेक अंशुओं-काण्डों, पर्वों, ग्रन्थियों से युक्त कोणीय (कोणयुक्त), बहुशाखीय, पत्रयुक्त एवं सुगन्धयुक्त होता है। सुश्रुत संहिता में सोमलता का वर्णन अग्रलिखित रूपेण प्राप्त होता है-

अंशुमान् सोमलता के पन्द्रह पत्ते होते हैं, जो शुक्लपक्ष में प्रस्फुटित होते हैं तथा कृष्णपक्ष में घट जाते हैं। शुक्लपक्ष में चन्द्रमा की कला के अनुसार एक-एक पत्र प्रस्फुटित

होता है एवं कृष्णपक्ष में एक-एकशः इसका पत्ता झड़ता जाता है एवं अमावस्या के दिन लता मात्र अवशिष्ट रह जाती है। अंशुमान् सोम घृतगन्ध तुल्य गन्ध वाला होता है, रजतप्रभ कन्द वाला होता है। मुञ्जवान् सोम केले के आकार का कन्द वाला तथा लशुन-सदृश पत्ते वाला होता है। चन्द्रमा सोम सुनहरे रंग वाला होता है तथा सदैव जल में तैरता रहता है। गरुडाहृत तथा श्वेताक्ष पाण्डुर वर्ण के तथा सांप की केंचुली के समान होते हैं तथा वृक्षाग्र में लटकते रहते हैं तथा विभिन्न चित्र-विचित्र मण्डलों से अलंकृत होते हैं। सभी सोम पन्द्रह पत्ते वाले दूध, कन्द तथा लता वाले एवं विविध पत्रों से युक्त होते हैं।

सोमलता का उत्पत्ति स्थान-

ऋग्वेद में सोमलता के उत्पत्तिस्थान या आवास के अनेक सन्दर्भ प्राप्त होते हैं। अधोलिखित मन्त्रों में सोम को गिरिष्ठ-पहाड़ों पर स्थित बताया गया है-

(क) परि सुवानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षाः।
मदेषु सर्वधा असि।। - ऋग्वेद ९/१८/१

(ख) असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः।

- ऋग्वेद ९/६२/४

(ग) तं मर्मृजानं महिषं न सानावंशुं दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम्।

- ऋग्वेद ९/९५/४

इसके अतिरिक्त इसे गिरियों पर निवास करने वाला भी कहा गया है तथा इसे पर्वतों पर बढ़ने वाला (पर्वतावृधम्) कहा गया है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि श्येन ने सोम को अद्रि (पहाड़) पर स्थापित किया है-

हृत्सु क्रतुं वरुणो अप्स्वग्निं दिवि सूर्यमदधात् सोममद्रौ।।

- ऋग्वेद ५/८५/२

अक्षसूक्त में जुए के पाशों को मुञ्जवान् पर्वत पर उत्पन्न होने वाले सोम के समान हर्षकारी बताया गया है।

सुश्रुत संहिता में सोमोत्पत्ति के निम्नलिखित स्थान बताये गये हैं-

हिमालय में अर्बुदाचल, सह्याद्रि, महेन्द्रपर्वत, मलयपर्वत, श्रीपर्वत, देवगिरी, देवसह, पारियात्र, विन्ध्याचल, देवसुन्द ह्रद, वितस्ता नदी के ऊपर स्थित पहाड़, सिन्ध महानद, मुञ्जवान् तथा अंशुमान् पर्वत एवं कश्मीर स्थित क्षुद्रकमानस।

सोम के उत्पत्तिस्थान, आवास या देश के उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि यह मुञ्जवान् नदी या ह्रद शर्यणावत्, पस्त्यावान्, आर्जीक, आर्जीकीय, सुषोमा, जलाशयों-सिन्धु, क्षुद्रकमानस एवं हिमालय, आबू सह्य, महेन्द्र, मलय, देवगिरि, देवसह्य, पारियात्र, विन्ध्य तथा अंशुमान् पर्वतों में उत्पन्न होता है या उपर्युक्त स्थलों में इसकी अवस्थिति है।

सोमलता के गुण एवं कार्य-

स्वाद- सोमलता के पौधे या रस को ऋग्वेद में सुरभियुक्त, तीव्र स्वादु, मधुर, मधुमान् तथा रसवान् कहा गया है, यथा-

सहस्राधारः सरभिरदब्धः परिस्रवः वाजसातौ नृषह्ये।

सोमरस का स्वाद तीव्र, मधुर, स्वादिष्ठ तथा सुरभियुक्त होता है। सोमरस में दूध, दधि, मधु आदि के सम्मिश्रण का जो वर्णन प्राप्त होता है, वह इसकी अत्यधिक तीव्रता को संकेतित करता है।

गुण- वैदिक संहिताओं में सोमलता या सोमरस के अत्यन्त विलक्षण गुणों का वर्णन प्राप्त होता है। यह देवों एवं मनुष्यों का अत्यन्त प्रिय पेय है। इस सोमरस को कवि, कविक्रतु, मेधावी, वीर, प्राज्ञ एवं विचक्षण कहा गया है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि देवताओं के साथ स्थित सोम कामनाओं का वर्षक, क्रान्तप्रज्ञ, सबका प्रीणयिता एवं शत्रुहन्ता है।

यदि हम उपर्युक्त वर्णन को सामान्य अभिधेयार्थ में ग्रहण करें तो एक सामान्य लता कभी वीर, प्राज्ञ, विलक्षण एवं कवि नहीं हो सकती है। वेद विश्व का प्राचीनतम साहित्य है। अतः जिस तरह हम लौकिक साहित्य में लाक्षणिक एवं व्यंग्य अर्थ ग्रहण कर विशेष स्थलों के भावों को समझते हैं, जैसे गंगायां घोषः का लाक्षणिक अर्थ गंगा के तट में घोष ऐसा अर्थ करते हैं, उसी प्रकार यहाँ भी हमें लाक्षणिक अर्थ इस प्रकार करना चाहिए कि सोमरस के सेवन से व्यक्ति वीर, बुद्धिमान्, विलक्षण आदि गुणों से युक्त हो सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। सोमरस के

पान से बल, सुवीर्य एवं प्रज्ञा की प्राप्ति होती है। यह वाक्शक्ति को प्रेरित करने वाला है। वैदिक साहित्य के वर्णन से ज्ञात होता है कि सोमरस के सेवन से शारीरिक बल, वीर्य, पराक्रम, बुद्धि, विलक्षणता, वैराग्य, दीर्घायुष्य, चिरतारुण्य, वाणी एवं बुद्धि में शक्ति तथा तेजस्विता की प्राप्ति होती है।

ऋग्वेद के अनुसार सोमपान अमृतत्व एवं देवत्वप्रदायक है। भौतिक सोमलता का पान केवल चिरायुष्य तेज, मेधा, बल, वीर्य आदि प्रदान कर सकता है, किन्तु जब तक हम उस परम सोम परमात्मा की उपासना के दिव्य सोमरस का पान नहीं कर लेते, तब तक हम पूर्ण अमृतत्व को प्राप्त नहीं कर सकते। ऋग्वेद का ऋषि भी इसी तथ्य को उद्घोषित कर रहा है-

सोमं मन्यते पपिवान् यत् संविषन्त्योषधिम्।
सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन।।

- ऋग्वेद १०/८५/०३

परमात्मा से प्रार्थना है कि समस्त मानव जाति सोमादि दिव्य औषधियों के सेवन से बल, वीर्य, पराक्रमयुक्त हो करके प्रभु की उपासना से दिव्यानन्दरूपी सोमरस का पान कर अतुल बल, वीर्य एवं सर्वविध सामर्थ्यवान् हो एवं वैदिक ज्ञान ज्योति, दिव्यप्रेम तथा विश्वशान्ति की स्थापना में समर्थ हो।

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि आपके पास हों तो कृपया हमें सूचित करें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण, विचार या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख स्मारिका में प्रकाशित किये जा सकें।

सम्पर्क सूत्र- ०९४६०४२११८३, ०१४५-२४६०१६४

ई-मेल-psabhaa@gmail.com

परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर-३०५००१ (राज.)

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है, वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय-व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें। **- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३**

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३० जून २०१७ तक)

१. श्री बलवन्त सिंह आर्य, बीकानेर २. श्री नवीन कुमार, सोनीपत ३. श्री संजय गुप्ता, अम्बाला कैन्ट ४. श्री अशोक गोयल, अजमेर ५. डॉ. पुरुषोतम आर्य, जलगाँव ६. श्री जयराम आर्य, मनियार महेन्द्रगढ़ ७. श्री गजानन्द आर्य, मुम्बई ८. श्रीमती रीता गुप्ता, मुम्बई ९. प्रो. आर.एस.कोठारी, जयपुर १०. श्रीमती प्रकाशवती राठी, सोनीपत ११. श्री निश्चय गोयल, सूरत १२. डॉ. किशोर काबरा, अजमेर १३. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर १४. स्वामी नित्यानन्द, हरिद्वार १५. श्री श्यामलाल, फतेहनगर १६. श्री पुरुषोत्तमलाल अग्रवाल फतेहनगर १७. श्री अश्विनी द्विवेदी, आगरा १८. श्रीमती शकुन्तला आर्या, बीकानेर १९. डॉ. जितेन्द्र कुमार, भरतपुर २०. श्री रंजन हांडा, नई दिल्ली २१. श्री शीलप्रिय आर्य, भिवाड़ी २२. श्री दिलीप कुमार आर्य, देवरिया २३. श्री ओमप्रकाश विश्वकर्मा व श्री आशीष विश्वकर्मा, उज्जैन २४. श्री महावीर प्रसाद, चरखी दादरी २५. श्रीमती रतनमाला सोनेराव आचार्य, लातूर २६. श्री उम्मेद सिंह, नई दिल्ली २७. श्री ताराचन्द बरनवाल व श्रीमती मधु देवी, देवरिया २८. श्री ललित मोहन, नई दिल्ली २९. श्री रमेशचन्द बरनवाल, देवरिया ३०. श्री मुकेश सिंघल, जयपुर ३१. श्री रामदयाल गौतम, बाँदीकुई ३२. डॉ. पद्मजा दारुर, कोल्हापुर ३३. श्रीमती चाँदनी मेहता व श्री आशीष कुमार, नई दिल्ली। **- परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३० जून २०१७ तक)

१. श्री गुलाबचन्द, छोटी सादड़ी २. श्री मोदीराम आर्य, छोटी सादड़ी ३. श्री पन्नालाल गैना, जेठाना, अजमेर ४. श्री घीसालाल पाटीदार, छोटी सादड़ी ५. श्री राधाकृष्ण, नरेला, दिल्ली ६. श्री पप्पू चारेवाला, दौराई, अजमेर ७. मास्टर धारासिंह आर्य, जीन्द ८. श्री श्रीरामनारायण आर्य, पानीपत ९. श्री दिनेश शास्त्री, गुड़गाँव १०. श्री अशोक कुमार मीणा, सवाई माधोपुर ११. श्री गजानन्द आर्य, मुम्बई १२. श्रीमती प्रकाशवती राठी, सोनीपत १३. श्रीमती शकुन्तला पांचरिया, पीसांगन, अजमेर १४. श्रीमती मन्जु शर्मा, अजमेर १५. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर १६. श्री बद्रीलाल अग्रवाल, फतेहनगर १७. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर १८. श्रीमती मिथिलेश आर्य, अजमेर १९. श्री जीवन आर्य, उदयपुर २०. श्री देवी सिंह आर्य, दिल्ली २१. श्री राजन आर्य, इलाहाबाद २२. श्री शम्बोध मित्रा वेदालंकार, कोशाम्बी २३. श्री रिषभ गुप्ता, अम्बाला कैन्ट २४. ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट, नई दिल्ली २५. श्री आर.एस. गुप्ता, भरतपुर २६. श्री अलंकार कुमार, नोएडा २७. श्री विकास आर्य, सहारनपुर २८. श्री सन्तोष कुमार चतुर्वेदी, जयपुर २९. श्री किशन सिंह मेहर, अजमेर ३०. डॉ. मनोज गुप्ता, झुन्झुनु ३१. श्री रामदीन प्रसाद जायसवाल, देवरिया ३२. श्री कृष्णकान्त सिंह, नोएडा ३३. श्रीमती जया देवी जायसवाल, देवरिया ३४. श्री श्रीपाल आर्य, बरेली ३५. श्री जगवीर आर्य, नई दिल्ली ३६. सुश्री शीतल प्रसाद आर्य, देवरिया ३७. श्री हेमसिंह चौहान, बाड़मेर ३८. श्री अमित मलिक, पानीपत ३९. श्री रामकँवर मानधना, मुम्बई ४०. श्री अभिषेक नांगिया, नई दिल्ली ४१. श्रीमती होशियारी देवी, भरतपुर ४२. श्री ताराचन्द बरनवाल व श्रीमती मधु देवी, देवरिया ४३. श्री लक्ष्मण आर्य मुनि, लखनऊ ४४. श्री रामलखन पाल, कुण्डा, प्रतापगढ़ ४५. श्री रामसुन्दर गुप्ता, प्रतापगढ़ ४६. मास्टर मुनिराम, सोनीपत ४७. श्री सुरेश आर्य, बलिया ४८. श्री आलोक कुमार, बलिया ४९. श्री रमेशचन्द वर्मा, देवरिया ५०. श्री श्योताज

सिंह, अलवर ५१. श्रीमती गीता देवी, बलिया ५२. श्री शंकर लाल, जोधपुर ५३. श्रीमती मुन्नी देवी, पटना ५४. श्री धनप्रसाद गुप्ता, नई दिल्ली ५५. श्री हरि सिंह व मधु, उर्मिला, देवास ५६. श्री जियालाल, सहारनपुर ५६. श्री घनश्याम हीराचन्द दलाल, बुरहानपुर ५७. श्री विपिन कुमार, नई दिल्ली ५८. श्री रमेश चन्द सन्तोष कुमार, नई दिल्ली ५९. श्री विनय शर्मा व श्रीमती आशा देवी, नई दिल्ली ६०. श्री जयराम प्रसाद, बलिया ६१. कु. मनीषा आर्य, वाराणसी ६३. मास्टर कपूर सिंह आर्य, जीन्द ६४. श्री राहुल आर्य, नई दिल्ली ६५. श्रीमती सुनीता आर्य, पठानकोट ६६. श्री अरुण कुमार, दिल्ली ६७. श्री लाल सिंह, चरखी दादरी ६८. श्रीमती गायत्री विश्वनाथ गायकवाड़, लातूर ६९. श्रीमती वैशाली गुप्ता, अजमेर ७०. श्री डोरीलाल आर्य, लखनऊ ७१. श्री कृपाशंकर दुबे, जौनपुर ७२. श्रीमती रमा मेहता व श्री अशोक मेहता, नई दिल्ली।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

---

१६ से ३० जून २०१७

संस्था - समाचार

आर्यसमाज के प्रसिद्ध इतिहासकार एवं परोपकारिणी सभा के सदस्य **श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी** ने प्रात:कालीन प्रवचन में कहा कि किसी श्रेष्ठ कार्य को पूर्ण करने के लिए साधन, धन आदि पदार्थों की आवश्यकता हो तो किसी धनवान से उसकी पूर्ति हो जाती है लेकिन किसी कार्य में ऊर्जा, उत्साह, जोश, प्रेरणा और सर्वोत्तम सहायता केवल ईश्वर से ही मिलती है। जिससे बड़ा कठिन कार्य भी सरलतापूर्वक सम्पन्न हो जाता है। दुर्गुण, दुर्विचार को ग्रहण करने पर उसी के जैसे अन्य दुर्गुण, दुर्विचार से हम ग्रस्त हो जाते हैं। जब एक सुविचार ग्रहण कर लेते हैं तो उसकी सेना उसके पीछे भागती चली आती है। एक के बाद दूसरा सद् विचार हमें प्राप्त होता है। सुविचारों में बहुत बल होता है जिससे घोर विपत्तिग्रस्त निराश मनुष्य भी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। ईश्वर की उपासना करके उसके गुण, कर्म, स्वभाव को हम अपने जीवन में धारण करें।

रविवारीय प्रात:काल प्रवचन में **स्वामी मुक्तानन्द जी** ने कहा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव के बिना योगाभ्यास या ईश्वर उपासना का आरंभ नहीं होता है। ऋषि अपने ज्ञान और अनुभव को दूसरों तक पहुँचाने के लिए नि:स्वार्थ उपदेश देते हैं। उनके उपदेशों में निर्दयता, कठोरता, निष्ठुरता नहीं होती है। समाधि अवस्था में वेदमन्त्रों का साक्षात् करने वाले और शास्त्रों के पठन-पाठन से तत्त्वज्ञान प्राप्त करने वालों को ऋषि कहते हैं।

प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि ऋषियों का मुख्य विषय अध्यात्म रहता है। अध्यात्म द्वारा उन्होंने संसार का उद्धार किया। जिस व्यक्ति में आध्यात्मिकता नहीं होती वह समाज की उन्नति में बाधा उत्पन्न करता है। इसलिये ऋषियों ने अध्यात्म को सर्वोपरि रखा।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **आचार्य कर्मवीर जी** ने कहा कि परमपिता परमात्मा ने वेद के माध्यम से हमें उन्नति करने का उपाय बताया है। सांसारिक उन्नति में माता-पिता, गुरु, मित्र, अन्य सम्बन्धी सहायक बन सकते हैं। हमारी उन्नति में ईश्वर सबसे बड़ा सहायक और सुमित्र है। धन, बल, विद्या आदि ऐश्वर्य बढ़ने पर सांसारिक मित्रों की संख्या बढ़ती है। समान गुण वालों में मित्रता होती है। सांसारिक मित्र हमारा साथ छोड़ सकते हैं परन्तु ईश्वर हमारा साथ नहीं छोड़ता। वह सदा साथ रहता है और हमारे ऐश्वर्यों को बढ़ाता है।

सायंकालीन प्रवचन में उपदेश मंजरी पुस्तक के चौदहवें उपदेश पर चर्चा करते हुए **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने कहा कि गृहस्थ स्त्री पुरुष को अपने-अपने वर्ण और योग्यता के अनुसार शास्त्रोक्त धर्मपालन तथा नित्यकर्म अवश्य करना चाहिये। यह नित्यकर्म ऋषियों की पद्धति से ही करना चाहिये। प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ अर्थात् प्रात: सायं संध्या-उपासना में सब जगत् के उत्पत्तिकर्ता परमात्मा के तेज का ध्यान करके बुद्धि की मलिनता को दूर करना चाहिये। वेद और वेद अनुकूल ऋषिकृत ग्रन्थों का ही पठन-पाठन करना चाहिये।

शनिवारीय सायंकालीन प्रवचन में **ब्रह्मचारिणी विजयलक्ष्मी** ने कहा कि अपनी योग्यता से जो जितना अधिक धन कमाता है वह समाज में उतना ही बड़ा माना जाता है और दूसरों के लिए आदर्श बन जाता है। आध्यात्मिक जगत् में भी जो विद्वान् बहुत अधिक भौतिक साधन सम्पन्न है वही प्रसिद्ध होता है और पूज्य होता है।

रविवारीय प्रात:कालीन सत्र में **श्रीमती मनीषा शास्त्री जी** ने भजन सुनाया- 'तेरो नाम सुख की खान। दीजो मुझको कृपानिधान........... ।'

योग शिविर सम्पन्न- १८ से २५ जून तक आयोजित ग्रीष्मकालीन इस शिविर में कुल २६० स्त्री-पुरुष और बच्चों ने श्रद्धापूर्वक ध्यान-उपासना का अभ्यास किया। आचार्य सत्यजित् जी ने प्रतिदिन अन्तर्यात्रा एवं आत्मनिरीक्षण का अभ्यास करवाया। आचार्य सोमदेव जी ने यज्ञ करवाया एवं शंका समाधान किया। आचार्य सत्येन्द्र जी ने श्लोक उच्चारण, संध्या मन्त्र शुद्धि करवाया। स्वामी मुक्तानन्द जी और आचार्य कर्मवीर जी ने सन्ध्या-उपासना करवाया। ब्र. वरुण देव जी ने आसन, व्यायाम करवाया। शिविर में आये सभी साधकों ने पूरे समय मौन व अनुशासन बनाये रखा। सभा अधिकारियों के निरीक्षण में सभी शिविरार्थियों के ठहरने एवं भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था की गई। अंतिम दिन शिविरार्थियों ने अपने अनुभव सुनाये। शिविर के समापन अवसर पर आचार्य सोमदेव जी ने कहा कि परमात्मा का एक नाम व्रतपति है वह व्रतों का स्वामी है। उसके नियम और संकल्प सदा स्थायी रहते हैं। उसे साक्षी मानकर शिविर के सभी साधकगण अपने-अपने जीवन में दोषों, दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को छोड़ने तथा सद्गुणों को धारण करने का संकल्प करें। हमें ऐसे संकल्प लेना चाहिये जिससे हमारा व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय कल्याण हो। श्रेष्ठ व्रतों/संकल्पों का पालन करने वाला मनुष्य सुखी, आनन्दित होता है। यदि कोई गलत संकल्प ले लिया हो तो उसे तत्काल सुधारना चाहिये या तोड़ देना चाहिये। मनु जी के अनुसार सभी कामनाओं का मूल संकल्प होता है। सात दिन तक शिविर में हुए प्रवचन, प्रशिक्षण, ध्यान उपासना आदि सब ब्रह्मयज्ञ है। इस यज्ञ को आगे भी जीवित रखने का संकल्प लें। सभी शिविरार्थियों से संकल्प-पत्र भरवाया गया।

वृष्टि-यज्ञ आरम्भ- जीव सेवा समिति के तत्वावधान में प्रतिवर्ष ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में वृष्टि-यज्ञ का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष यह २५ जून से आरम्भ हो गया है। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा अथर्ववेद के वृष्टि-सूक्त का पाठ करके यज्ञ में आहुतियाँ दिलवाई जाती हैं।

अतिथि- महर्षि दयानन्द चित्र दीर्घा एवं वस्तु-प्रदर्शनी देखने, विद्वानों-संन्यासियों से मिलने, यज्ञ-प्रवचन से लाभ लेने, भ्रमण तथा प्रचार हेतु ब्रह्मचारी, संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान्, गृहस्थ स्त्री-पुरुष-बच्चे आते रहते हैं। पिछले पन्द्रह दिनों में भिवानी, मुरैना, छिंदवाड़ा, गुड़गाँव, दिल्ली, कोल्हापुर, अम्बाला कैन्ट, कानपुर, शाहपुर, कौशाम्बी, देहरादून, लखनऊ, मोतीहारी, सहारनपुर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, कुरुक्षेत्र, भरतपुर, हरिद्वार, महेन्द्रगढ़ आदि स्थानों से कुल ६० लोग ऋषि उद्यान आये।

जन्मदिवस एवं विवाह वर्षगाँठ - ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में २१ जून को शिविरार्थी श्रीमती प्रकाशवती राठी ने अपनी विवाह वर्षगाँठ के अवसर पर अतिथि यज्ञ के होता बनकर आहुतियाँ दी। श्री रमेश मुनि एवं श्रीमती उषा जी ने अपने सुपौत्र इंग्लैंड निवासी आदित्य बंसल के जन्मदिवस पर २४ जून तथा अंश बंसल के जन्मदिवस के अवसर पर २७ जून को अतिथि यज्ञ के होता के रूप में यज्ञ किया। संन्यासियों, विद्वानों तथा सभी वृद्धजनों ने अपने-अपने आशीर्वाद प्रदान किये। परोपकारिणी सभा, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवं ऋषि उद्यान परिवार की ओर से उनकी दीर्घ आयु की प्रार्थना करते हुए हार्दिक शुभकामनाएँ।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है। **- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१**

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित व उपलब्ध नये संस्करण

१. सत्यार्थ प्रकाश में क्या है?

लेखक - प्रो. धर्मवीर, प्रकाशक- परोपकारिणी सभा, अजमेर,

पृष्ठ संख्या- ३२ **मूल्य -** रु. १५/-

प्रस्तुत पुस्तक का डॉ. धर्मवीर जी के युवापन की रचना है। इस पुस्तक को पं. भारतेन्द्रनाथ जी (महात्मा वेदभिक्षु) ने डॉ. धर्मवीर जी से आग्रहपूर्वक लिखवाया था। पहली बार इसे सन् १९७५ में महात्मा वेदभिक्षु जी ने ही प्रकाशित किया था। एक लम्बे अन्तराल के बाद परोपकारिणी सभा ने इसका पुनर्प्रकाशन किया है। इस पुस्तक को पढ़कर नये से नया व्यक्ति सत्यार्थप्रकाश के महत्व को समझ सकता है अर्थात् यह पुस्तक आर्यसमाज के प्रचार में सहायक सिद्ध हो सकती है। आर्य महानुभावों से अनुरोध है कि इसे अधिक से अधिक संख्या में खरीदकर नई पीढ़ी तथा नये लोगों को वितरित करें तथा प्रकाशनों से भी निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में इसे मंगायें ताकि लोग उसे खरीद सकें। इस ग्रन्थ को पढ़ने से ऋषि दयानन्द के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने की प्रेरणा मिलती है। सत्यार्थप्रकाश की समस्त विषयवस्तु को इस ग्रन्थ में समाहित किया गया है। पाठक इसे पढ़कर लाभ उठायेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

२. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

महर्षि दयानन्द का महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार

मूल्य - रु. ४००/- पृष्ठ संख्या - ६१६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

३. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

४. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

५. असली महात्मा (हिन्दी)

मूल्य - रु. २००/- पृष्ठ संख्या - २४७

यह पुस्तक मूलरूप से तेलुगु में लिखी गई है। लेखक श्री एम.वी.आर. शास्त्री ने जिस शोधपूर्ण ढंग से और जिस सरसता से इस पुस्तक को लिखा है, उससे दस्तावेजों में रुचि रखने वालों और उपन्यास में रुचि रखने वालों के लिये भी यह एक अतुलनीय ग्रन्थ है। हिन्दी में अनुवाद करते समय श्री जे.एल. रेड्डी ने लेखक के मूल भावों को जिस दक्षता से संजोया है, उससे हिन्दी पाठकों को ये ऐतिहासिक दृष्टि वाला ग्रन्थ किसी उपन्यास से कम नहीं लगेगा।

पाठकों की प्रतिक्रिया

१. श्रीमान् जी, अप्रैल (प्रथम) २०१७ की परोपकारी पत्रिका में स्वामी सत्यप्रकाश जी का लेख 'ऋषि दयानन्द की कल्पना के यज्ञ-होतर्यज' पढ़ा। स्वामी जी ने सही लिखा है कि हमारे सभी चिकित्सालय, सेवाग्रह, फैक्टरियाँ सभी यज्ञस्थली हैं और दीन- दुखियों की सहायता करना भी यज्ञ ही है। स्वामी जी की इस बात से मैं सहमत हूँ कि आर्यसमाज के कर्मकांडी यज्ञ जीविका का साधन बनते जा रहे हैं। इस बात से मुझे और भी प्रसन्नता हुई कि स्वामी जी ८५ वर्ष की आयु में आर्यसमाज में उचित बदलाव के लिए दिव्य ऊर्जा से ओत-प्रोत हैं। मेरी आयु ७० वर्ष है। मैं इस पावन कार्य के लिए यथाशक्ति सहयोग करना चाहूँगा। यदि स्वामी जी का दूरभाष नम्बर मिल जाय तो इस बारे में चर्चा करना चाहुँगा।

- श्री कमलनयन शर्मा, गाजियाबाद (उ.प्र.)

[**टिप्पणी*(सम्पादक)*** -महोदय, *आपने लेखक की दूरभाष संख्या माँगी है-इस सम्बन्ध में हमारा निवेदन है कि यह कई वर्ष पूर्व लिखा गया लेख है। लेखक स्वामी सत्यप्रकाश जी इस संसार में नहीं है। इससे पूर्व के अंकों मार्च-प्रथम व मार्च-द्वितीय में इनके लेख टिप्पणी के साथ प्रकाशित किये गये थे। इस कारण इस लेख पर कोई टिप्पणी नहीं दी है। वैसे लेखक पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के योग्य वैज्ञानिक सुपुत्र थे। आपको हुई असुविधा के लिये खेद है।*]

२. श्रीमान् डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा जी ! मैं आप, आपके के परिवार एवं परोपकारी पत्रिका से सम्बन्धित समस्त व्यक्तियों के लिये मंगल कामनायें करता हूँ। परोपकारी जून (प्रथम) २०१७ में प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी के लेख कुछ तड़प-कुछ झड़प में आपका संक्षिप्त परिचय पढ़ा। अति प्रसन्नता हुई। आपके प्रबुद्ध, योग्य, शिक्षित व आर्य परिवार के विषय में भी ज्ञान हुआ। मैंने गत दिनों ३-४ पत्र सम्पादक/प्रकाशक परोपकारी पत्रिका को लिखे। एक-दो पत्रों में अपनी जिज्ञासा भी लिखी तथा पाठक-प्रतिक्रिया हेतु भी लिखा। पाठक- प्रतिक्रिया प्रत्येक पत्र, पत्रिका, समाचार-पत्र का दर्पण होती है, परन्तु न मालूम किन कारणो से आपने मेरे पत्रों पर ध्यान नहीं दिया? वैसे प्रत्येक सम्पादक/प्रकाशक/स्वामी अपने पत्र-पत्रिकाओं व समाचार पत्रों का मालिक होता है। जैसा वह चाहेगा वैसा ही करेगा, चाहे पाठकगण कुछ भी लिखें? यह मेरा विचार है। परोपकारी पत्रिका के हजारों पाठक हैं, क्या किसी भी पाठक की कोई प्रतिक्रया नहीं आती है? ऐसा नहीं हो सकता है।

[टिप्पणी (सम्पादक)*-आपका यह विचार उचित ही है कि पाठक-प्रतिक्रिया पत्र-पत्रिकाओं का दर्पण होती है। इसी कारण परोपकारी ने 'पाठकों के विचार' एवं 'पाठकों की प्रतिक्रिया' नाम से जो स्तम्भ प्रारम्भ किये। हमारे पास पाठकों के जो भी विचार या प्रतिक्रियाएँ आती हैं, उन्हें पत्रिका में स्थान दिया ही जाता है, परन्तु कभी-कभी प्रतिक्रियाएं कम होती हैं और किसी अंक में अभाव भी हो जाता है। आपके विचार ही हमारा सम्बल हैं, एतदर्थधन्यवाद।]*

पत्रिका में 'संध्योपासना क्यों-३' प्रवचनकर्त्ता-'डॉ. धर्मवीर जी' लेखिका-सुयशा आर्य का लेख बहुत अच्छा आ रहा है। जो लोग संध्योपासना नहीं करते, उनके लिये यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। मैंने कई प्रबुद्ध व्यक्तियों, शिक्षकों व प्राचार्यों को इसकी छायाप्रति करा कर दी तथा उन्होंने संध्योपासना शुरु भी कर दी है। पत्रिका जून (प्रथम) २०१७ में 'किष्किन्धा का वानर राजवंश' जो आचार्य उदयवीर शास्त्री ने लिखा-विचारणीय है। वानरों व रीछों तथा राक्षसों की पत्नियों को अतिसुन्दर व आकर्षक दिखाया जाता है, यह कहाँ तक उचित है? आज अज्ञानता घर-घर में छाई हुई है।

- श्री लक्ष्मण सिंह टाँक, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

आर्यजगत् के समाचार

१. पुरोहित की आवश्कता- आर्यसमाज श्री गंगानगर में एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्कता है। दक्षिणा योग्यता अनुसार। इच्छुक व्यक्ति पुरोहित के कार्य हेतु सम्पर्क करें। **प्रधान-९८२८२४०७१७, मन्त्री-९७८५७७२८७८।**

२. वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया- आर्यसमाज ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-६० का ६५ वाँ वार्षिकोत्सव नौ दिनों तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम के आकर्षण का केन्द्र-प्रभात फेरी, बाल सम्मेलन (इस बाल सम्मेलन में बच्चों द्वारा सामूहिक यज्ञ, मौखिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, वैदिक मन्त्र उच्चारण प्रतियोगिता के साथ-साथ भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया) एवं महिला सम्मेलन गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

३. प्रवेश प्रारम्भ- गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर उ.प्र. में संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे- अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का भी उत्तम ज्ञान कराया जाता है। नये सत्र के प्रवेश ०१ जुलाई २०१७ आरम्भ हो रहे हैं। यहाँ पर मध्यमा स्तर (इन्टरमीडिएट) की परीक्षाएँ उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद् लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी' द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का ५ वीं उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

सम्पर्क सूत्र-९९९७४३७९९०,९९९७०४७६८०

४. विद्यार्थियों को सहयोग- आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के द्वारा १० गुरुकुल-शिक्षित ब्रह्मचारियों- जो उच्चशिक्षा-बी.ए., एम.ए., बी.एड. करना चाहते हैं व आर्थिक दृष्टि से कमजोर और असमर्थ हैं उनके निवास तथा सहयोग की योजना बनाई गई है। जो विद्यार्थी पढ़ने में योग्य हैं एवं जिनमें आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के कार्यों में रुचि, निष्ठा एवं भावना है, उन्हीं विद्यार्थियों को वरीयता दी जायेगी। आवासीय समय में आर्यसमाज द्वारा गठित समिति के निर्देशों व बातों का पालन करना अनिवार्य होगा। चयन समिति के साक्षात्कार द्वारा ही किया जायेगा। इच्छुक विद्यार्थी आवेदन-पत्र ३० जून तक स्वयं या डाक द्वारा भिजवा सकते हैं। प्रधान/मन्त्री आर्यसमाज राजेन्द्र नगर, निकट राजेन्द्र प्लेस, मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-६०। **सम्पर्क -२५७६०००६**

५. प्रवेश प्रारम्भ- दयानन्द संस्कृत विद्यालय गुरुकुल गंगीरी अलीगढ़ से ४० किलोमीटर दूर स्वामी योगानन्द जी सरस्वती द्वारा स्थापित आर्ष पद्धति पर आधारित गुरुकुल विधिवत रूप से चल रहा है। आदर्श गौशाला के शुद्ध दुग्ध की व्यवस्था है, प्रवेश प्रारम्भ। **सम्पर्क - ९७५९७०९४२४।**

६. स्थापना समारोह मनाया- श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा देहरादून का २, ३, ४ जून २०१७ को १८ वाँ स्थापना समारोह मनाया गया। इस अवसर पर आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा का पं. श्री राजवीर शास्त्री की पुण्यस्मृति में पौंधा गुरुकुल के आचार्य धनञ्जय शास्त्री ने सम्मान किया। अभिनन्दन पत्र स्वामी प्रणवानन्द, पीयूषकान्त दीक्षित (कुलपति-उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय) द्वारा प्रदान किये गये।

चुनाव समाचार

७. आर्यसमाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-६० के चुनाव सम्पन्न हुए। जिसमें **प्रधान**- श्री अशोक सहगल, **मन्त्री**- श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा व **कोषाध्यक्ष**- श्री सतीश कुमार को चुना गया।

८. आर्यसमाज 'शहर' बड़ा बाजार-सोनीपत के सम्पन्न हुए चुनाव में **संरक्षक**- श्री ईश्वरदत्त बुधीजा, **प्रधान**- श्री सुभाष चाँदना, **मन्त्री**- श्री प्रवीण आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री दीपक तलवार (आर्य) चुने गए।

शोक समाचार

९. विनोबा नगर बिलासपुर (छ.ग.) के निवासी एवं आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री मुकुन्द माधव के सुपुत्र **श्री सौरभ गुप्ता** का ३६ वर्ष की आयु में २६.०६.२०१७ सोमवार को निधन हो गया। इन्होंने दादा के देहदान से प्रेरित होकर दान की परम्परा को निभाते हुए अपने नेत्रदान

करके नेत्रहीनों का जीवन रोशन किया। परिवार के हर सदस्य ने देहदान या अंगदान का संकल्प ले रखा है।

१०. एक दु:खद सूचना है कि आर्य समाज के विद्वान्, रामकृष्णपुरम्-४, दिल्ली आर्यसमाज के मन्त्री, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के सहायक निदेशक डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी की धर्मपत्नी **श्रीमती डॉ. अर्चना त्रिपाठी** का २७ जून २०१७ को प्रात: २ बजे निधन हो गया। डॉ. अर्चना त्रिपाठी भी केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय-दिल्ली में सहायक निदेशक एवं ''भाषा पत्रिका'' की सम्पादिका थीं। दक्षिण अफ्रीका के स्वतन्त्रता संग्राम की प्रसिद्ध कविताओं का हिन्दी अनुवाद भी आपने किया। हिन्दी के लिये विभिन्न आन्दोलनों में आपकी सक्रिय भूमिका रही।

११. आर्यसमाज भावी, जोधपुर के प्रधान श्री भँवरलाल आर्य के सुपुत्र **श्री सोमदेव आर्य** (कोषाध्यक्ष-आर्यसमाज भावी) का ४७ वर्ष की आयु में १८ जून २०१७ को निधन हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से श्री रामनारायण शास्त्री-जोधपुर एवं श्री ओममुनि (मन्त्री-परोपकारिणी सभा) द्वारा कराया गया। आर्य समाज के कार्यों में श्री सोमदेव आर्य का बहुत सक्रिय एवं महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

१२. आर्यसमाज द्वारिका के सदस्य व आर्यवीर दल दिल्ली के श्री ब्रजपाल आर्य की माता **श्रीमती भगवती देवी** का ९३ वर्ष की आयु में २ जुलाई २०१७ को आकस्मिक निधन हो गया है। आप अपने पुत्र को सदैव ही आर्य समाज से जुड़े रहने के लिये प्रेरणा करती रहीं। माता जी का अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से किया गया।

१३. अत्यन्त खेद का विषय है कि ऋषि उद्यान अजमेर स्थित श्रीमद्दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय के वैद्य श्री डॉ. रमेशमुनि की धर्मपत्नि **श्रीमती उषा बन्सल** का आकस्मिक निधन दिनांक ०६-०७-२०१७ को प्रात: ६ बजे ऋषि उद्यान में हो गया। आप विदुषी, मृदुभाषी एवं आस्थावान् आर्या थीं। आपके पति श्री रमेश मुनि जी की चिकित्सा सेवाओं में आप निरन्तर हाथ बटाँती थीं तथा रोगियों का इलाज बहुत ही आस्थापूर्वक करती थीं। आपके निधन से संस्था को अपूरणीय क्षति हुई है। प्रभु आपकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा आपके परिवार को इस दु:खद घटना को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

पाठकों के विचार

१. आदरणीय श्रीमान्, मेरा आप से अनुरोध है कि आर्यसमाज क्या है, इसका समाज में क्या योगदान है-इस पर आप एक विस्तृत लेख पत्रिका में दे तथा आर्य समाज क्यों उपेक्षित हो रहा है-मैं इस पर काफी मनन करता हूँ फिर भी आप समय-समय पर जन- चेतना हेतु ऐसे लेख पत्रिका में प्रकाशित करते रहें तो अच्छा होगा। मुजफ्फरनगर में ५-६ आर्य समाजें हैं। गांधी कॉलोनी आर्य समाज में प्रतिदिन यज्ञ होता है तथा रविवार को बड़ा यज्ञ, विचार विमर्श भी होता है। २-३ आर्यसमाजों में रविवार को यज्ञ होता है और १-२ में कोई यज्ञ भी नहीं होता है, मात्र आर्यसमाज के नाम से छोटी ईमारत बनी हुई है। आज आर्य समाज का महत्त्व और भी ज्यादा है। स्थान-स्थान पर कथायें होती हैं जो जनता को भ्रमित करती हैं तथा मात्र धन कमाना ही इनका उद्देश्य रह गया है। मैं तो अपने स्तर से आर्य समाज का काफी प्रचार-प्रसार करता भी हूँ, परन्तु मैं देखता हूँ कि आर्यसमाज में जो व्यक्ति आते हैं वे सनातनी ज्यादा हैं तथा आर्य का मुखौटा लगाये हुए हैं तो फिर आर्य समाज का प्रचार-प्रसार कैसे होगा?

डॉ. लक्ष्मण सिंह टाँक, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

२. मनीषीवृन्द! मेरा पत्र लेखन का कारण है विश्व की प्रथम आर्यसमाज की दशा व दिशा। मेरी पीड़ा यह है कि जो विश्व की प्रथम आर्यसमाज है काकड़वाड़ी, उसकी ओर किसी विद्वान्, मनीषी, चिन्तक व विचारक का ध्यान नहीं है। यह वह आर्यसमाज है आर्यबन्धुओ! जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द के करकमलों द्वारा की गयी थी। आप सभी को यह सम्यक् प्रकार से विदित है कि यह आर्यसमाज महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित प्रथम आर्यसमाज है, अत: इस धरोहर को संवारके रखना हम सभी आर्यो का प्रमुख उद्देश्य है। क्योंकि आप सभी इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि देशभर में जगह-जगह भव्य आर्यसमाजें बनी हुई हैं, किन्तु काकड़वाड़ी, मुम्बई-४ आर्यसमाज का ऐसा भव्य स्वरूप दिखाई नहीं देता। अत: आवश्यक है कि हम सब मिलकर एक झण्डे के नीचे आयें और विश्व की प्रथम आर्यसमाज व महर्षि की इस धरोहर को एक नया स्वरूप प्रदान करें। क्योंकि इसकी भव्यता आर्यसमाज व महर्षि का गौरव है एतदर्थ इसका नवनिर्माण अत्यन्त आवश्यक है। - **प्रमोद शुक्ला**